नियति आ पुरुषार्थ

नियति आ पुरुषार्थ

(बाल कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

NIYATI AA PURUSHAARTH (नियति आ पुरुषार्थ)
Collection of Maithili Children Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-87-2
दाम: 250/- (भा.रु.)

पहिल संस्करण: 2023

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती मिंकी दास, ओलीपुर (मधुबनी), बिहार: 847404
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा क्रम

सुख-दुखः 07

दुख-सुखः 15

जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की: 23

अंधविश्वासः 31

बखेरिया लोकः 39

नव जीवनः 47

प्रीतिः 55

पुरुषार्थः 63

मन टँगि गेलः 72

नियति आ पुरुषार्थः 80

'पंगु' उपन्यासक बाद मण्डलजीक गद्य लेखनः 89

सुख-दुख

मुनीलाल आ धुनीलाल एक्के गामक एक्के हाइस्कूलक एक्के क्लासक विद्यार्थी छी। ओना, उम्रमे दुनूक बीच साल भरिक अन्तर अछि मुदा पढ़ैए एक्के वर्गमे। कहब जे एहेन अन्तर किए अछि? अन्तरक कारण अनेको भऽ सकैए, मुदा से नहि, ऐठाम दुनूक बीच अन्तरक मूल कारण अछि आर्थिक स्थिति। बुझिते छिऐ जे जेहेन आर्थिक तंगीमे रहैए ओ ओते जीवनक उपयोगमे पछुआइए आ जे जेते सुभ्यस्त रहैए ओ ओते अगुआइए। एहेन बेवहार सोल्होअना ने हमहीं मानै छी आ ने अहीं मानू, किए तँ एहनो होइए जे केतौ-केतौ, माने कियो-कियो ऐ सीमाकेँ कोसी बान्ह जकाँ तोड़ि अप्पन धारा प्रवाहित सेहो करिते अछि। खाएर जे जे करैए तेकरा अखन नजरअन्दाज करू, अखन एतबे जे साल भरिक जेठाइ-छोठाइ रहितो मुनीलाल आ धुनीलाल एक्के हाइस्कूलक नअम वर्गमे पढ़ैए।

वसन्त रीतुक मौसम, माने फागुन अन्त होइपर अछि आ चैतक लहकी आबए लगल अछि, संयोगसँ मुनीलाल आ धुनीलाल दुनू गोरे वर्गक तेसर कतारक ब्रेंचपर एक्केठाम बैसल अछि, तेसर घन्टीमे हिन्दी छइ।

जानल-मानल हिन्दीक शिक्षक गोपालबाबू छथिए। किए तँ शिक्षक दिवस, माने पाँच सितम्बर-के सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन जे स्वतंत्र देशक राजेन्द्रबाबूक पछाइत आ दोसर नम्बरक राष्ट्रपति भेल छला, ओना पहिल आ दोसर राष्ट्रपतिमे एते अन्तर छेलैन्हे जे

राजेन्द्रबाबू वकीलसँ राष्ट्रपति भेला आ राधाकृष्णन शिक्षक (प्रोफेसर)सँ राष्ट्रपति भेल छला, हुनके नामपर 'शिक्षक दिवस'क अवसरिपर नीक शिक्षकक रूपमे गोपालबाबू सम्मानित भेल छैथ, तँए छात्रोक नजैरमे आ शिक्षक सहित समाजोक नजैरमे गोपालबाबू प्रमाणित शिक्षक मानल जाइते छैथ। तेतबे नहि, गोपालबाबू अपनो नजैरसँ अपनाकेँ देखिते छैथ, तँए सम्मानित भेला पछातियो अपन केतेको अवगुणकेँ छोड़ि सद्गुण पकड़बो केलैन आ अखनो पकड़ैक परियासमे रहिते छैथ। अही क्रममे गोपालबाबू अपनाकेँ निरविचारी शिक्षक सेहो बना रहल छैथ।

हिन्दीक क्लासमे, माने हिन्दी विषयक क्लासमे, ऐठाम एकटा प्रश्न अछि जे हिन्दीकेँ 'विषय' मानल जाए आकि 'साहित्य'? मुड़कुट्टी भाषामे सभ विद्यार्थी बजिते छैथ- हिन्दी विषय। फिजिक्स हुअ कि केमेस्ट्री, भूगोल हुअ कि अर्थशास्त्र आकि बिजनेस मेथड हुअ कि एकाउण्ट, सभ विषय हिन्दी भाषामे लिखल जाइते अछि। तँए, भाषा आ विषयक बात छोड़ू, गोपालबाबू हिन्दी भाषा-साहित्यक शिक्षक छैथ।

निरविचारी शिक्षक भेने घन्टी बजैसँ पहिनहि गोपालबाबू मुड़ियारी दऽ दऽ ऐगला क्लास दिस तकैत रहै छैथ जे जखने क्लास खाली हएत, माने पहिलुका घन्टीक शिक्षक क्लास रूमसँ निकलता, तखने ऐगला क्लासमे अपने पहुँच जाएब। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे जँ दोसर घन्टीक क्लास सेहो रहल होनि, ओना से नइ रहने परिस्थितिमे अन्तर होइते अछि, मुदा से नहि, निरविचारी शिक्षक रहने गोपालबाबू क्लासमे अबिते अप्पन कर्तव्यपर धियान रखैत अप्पन काजकेँ समयसँ पूर्व करैक अभ्यास बनौनहि छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे कोनो काज समयेपर ने पूर्ति हएत आकि समयसँ पहिने पूर्ति भऽ जाएत? एहनो विचारकेँ

नहियेँ काटल जा सकैए, मुदा एते तँ कएले जा सकैए जे समयक गतिकेँ माने समयसँ अपनाकेँ तेज गतिमे आनि ओही काजकेँ समयक हिसाबसँ पहिनौं तँ सम्हारले जा सकैए। खाएर जे हुअए मुदा गोपालबाबूक मनमे एते जिज्ञासा छैन्हे जे जैठाम अप्पन कर्मक गति अछि तैठाम अपनाकेँ चुकाएब कोनो दृष्टिये नीक नहि अछि, तँए ओइ अनुकूल अपनाकेँ सदैत काल बनौने रहब उचित बुझि निमरजना करै छैथ।

वर्गक विद्यर्थियो तँ विद्यार्थीए ने भेला, तँए कखनो क्लास भेला पछातियो आ कखनो क्लास शुरू होइसँ पहिनौं पिक्की सेहो मारबे करै छैथ मुदा ऐठाम से नहि, गोपालबाबूक क्लास रहने सभ, वर्गक सभ विद्यार्थी, अपनाकेँ पहिनेसँ साकांच भऽ जाज्ञासु रूपमे, जहिना चिड़ैक गेल्ह अहराक चाहमे आँखि उठा-उठा माइयक बाट तकैत अछि, तहिना विद्यार्थी सभ गोपालबाबूकेँ तकैले आँखि उठबए चाहलक कि गोपालबाबू हाथमे किताब नेनहि क्लासमे प्रवेश केलैन।

कौलेज जकाँ हाइस्कूलमे घन्टीए-घन्टी हाजिरी नहियेँ बनौल जाइए जे ई काज गोपालबाबू करितैथ। क्लासमे आबि सोझे पंत[1]जीक कविताक पाँती शुरू केलैन- जग पीड़ित अछि अति दुखसँ जग पीड़ित अछि अति सुखसँ..।

ऐठाम 'पीड़ित' शब्द कने मरखाह बुझि पड़ैत हएत मुदा तेकरा अखन छोड़ू। अखन एतबे जे ई जग माने ई दुनियाँ दुखोसँ पीड़ित अछि आ सुखोसँ पीड़ित अछि।

भरल क्लासक विद्यार्थीक बीच विषयक भाव जगल। एक्के दुनियाँ दुनू केना भऽ सकैए? प्रश्न तँ अछिए।

[1] **पद्म भूषण महाकवि सुमित्रानंदन पंत**

बाल मन जहिना मुनीलालक तहिना धुनीलालक सेहो छल। मुदा जखन शिक्षक पढ़ा रहल छैथ तखन बीचमे उठियो कऽ किछु बाजैत सेहो उचित नहियेँ होएत। ओना, तइसँ घात आकि अवघात आन-आन छात्रकेँ जे भेल होइ मुदा मुनीलाल आ धुनीलालक मनकेँ अकासमे उड़ा देलक, जइसँ कविताक ऐगला पाँतियो आ व्याख्याओक चर्च, कान ठाढ़ केला पछातियो दुनू गोरे ने किछु सुनलक आ ने बुझलक। प्रश्न तँ आसान नहियेँ अछि। किए तँ जे दुनियाँ दुखसँ पीड़ित अछि ओ सुखोसँ केना पीड़ित रहत आ जखन सुखसँ पीड़ित रहत तखन दुखसँ केना पीड़ित हएत?

खाली रेल गाड़ीक डिब्बा जहिना इंजन लागल स्टेशनसँ गुजैर जाइए मुदा चढ़निहार रस्तेमे छुटि जाइ छैथ, सएह स्थिति मुनीलाल आ धुनीलालक भऽ गेलइ। माने, जहिना कोनो उताहुल लोककेँ उताहुल काज सिरपर सवार रहै छैन तहिना मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ भऽ गेल। ओना, दुनू गोरेक मनक उतलपन अपना-अपना विचारे अपन-अपन छेलै, केकर कोन रूपक छेलै से ने मुनीलाल धुनीलालक बुझैत आ ने धुनीलाल मुनीलालक बुझैत। बुझबो केना करैत, सात अरब लोककेँ सात अरब बुधियो-विवेक आ मनो तँ अछिए किने। बुझले अछि जे भरि दिनमे मन साठि हजारसँ ऊपर बेर टहलान मारैए। तैठाम ओ बुधि-विचारकेँ सदिकाल एकठाम थोड़े रहए देत, तखन तँ भेल जे बुधिये-विवेक ओकरा, माने मनकेँ गतानिकऽ पकड़ने रहए जे किम्हरो डोल-डाल ने हुअ देत। खाएर जे अछि से अछि। क्लास समाप्त होइते मुनीलाल धुनीलालकेँ कहलक-

"धुनी, हम कने गोपालबाबूसँ भेँट करबैन।"

जेना मुँहक बात छीनि कियो अपना मुहेँ वएह बात बजैए, तेकरा तँ लोक यएह कहि ने सीमापर ठाढ़ करैए जे अहाँ हमर पेटक बात मुँहक बोलक माध्यमसँ छीनि हमरा मनक बात अहाँ बजलौं

हेन। सह दैत धुनीलाल बाजल- “हुनकासँ हमहूँ भेँट करबैन।”

ओना, दुनू भाँइ जटायु जकाँ सुरुजेकेँ पकड़ैले अप्पन पाँखि नहि कटा, दुनू गोरे माने मुनियो लाल आ धुनियो लाल क्लास समाप्त होइते गोपालबाबूसँ मिलैले पाछू-पाछू विदा भेल। किछु दूर माने क्लास रूमसँ बैसाररूमक बीच, अपन-अपन डेग दुनू गोरे बढ़ा गोपालबाबूक लगमे पहुँच गेल। पहुँचते मुनिलाल बाजल-

“श्रीमान्, एकटा काज अछि।”

गोपालबाबू गायत्री मंत्र जकाँ मने-मन अप्पन ऐगला क्लास जपि रहल छला जे आब दसम क्लासमे घन्टी अछि, आइ की सभ पढ़बैक अछि...। तैबीच मुनीलालक बात सुनि पाछू उनैट ताकि बजला-

“अखन काजमे व्यस्त छी तँए अखन नहि, छुट्टी भेला पछाइत भेँट करिहह।”

जहिना तत्काल काज नहियोँ भेने जँ काजक आश्वासन भेटैए तँ मनक विश्वास जागिते अछि जे काज हेबे करत। तहिना दुनू गोरेकेँ माने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ भेल। पाछू घुमैत, माने अपना क्लास दिस अबैत दुनू गोरे विचारए लगल। मुनीलाल बाजल-

“धुनी भाय, भने नीक भेल।”

मुदा धुनीलालक मन टुटै सन भऽ गेल छेलइ। किए तँ छुट्टी तँ छुट्टी छी। ओ जहिना काजकेँ छुट्टी कऽ दइए जइसँ जीवनक छुट्टी सेहो भऽ जाइ छै तहिना अप्पन अनन्त जीवनक रूपक बीच काजकेँ नीको तँ बनैबिते अछि। धुनीलालक मन टुटै सन ऐ दुआरे बनि गेल छेलै जे जहिना असीम पियासलकेँ पानि भेटने असीम संतोष होइ छै, तहिना ने नइ भेटने असीम असंतोषो होइते छइ। सएह धुनीलालकेँ भेल। ओम्हर गोपालबाबूक मन भीतरे-भीतर हर्खसँ

हरखित होइत हरितम रूप पकैड़ अप्पन मान गढ़ि रहल छेलैन। गढ़ि रहल छेलैन, जहिना जनेउ अंगीकार करैसँ पहिने गठियौल जाइए जइसँ असीम बोनमे असीम रूपमे कोनो नव फूल-फल भेटने सेहो तहिना होइए। एकाएक गोपालबाबूक नजैरिक आगू भुकभुकाइत भगजोगनी जकाँ, जे अन्हार-इजोतक सीमापर ठाढ़ रहैए, हुअ लगलैन।

क्लास उसैरते गोपालबाबू ऑफिस रूमसँ निकैल मुनीलाल आ धुनीलालकेँ चारि साए विद्यार्थीक बीच ताकए लगला। जहिना गोपालबाबू मुनीलाल आ धुनीलालकेँ ओहन प्रेमी-प्रेमिका जकाँ, जे एक दोसरासँ मिलैले तेना उताहुल रहैए जे अरबो-अरब लोकक बीच एकाग्र भऽ ओइ पाछू लागि जाइए, तहिना दुनूकेँ ताकए लगला। एम्हर मुनीलाल-धुनीलाल सेहो भेँट करैले हिनका ताकिये रहल छेलैन। तीनूक नजैर एक-दोसरसँ मिलिते जहिना गोपालबाबू आगू ससरए लगला तहिना मुनीलाल आ धुनीलाल सेहो आगू बढ़ैत गोपालबाबूक लगमे चलि आएल। नजैर उठा जखन दुनू गोरेकेँ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे असीम पियाससँ दुनू गोरेक मन कछमछा रहल छइ। वर्षाक पानि जकाँ अकाससँ धरतीपर उतरैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ, जहिना भूख-पियास तोरा सभकेँ लागल छह, तहिना अपनो लागल अछि, तँए तीनू गोरे संगे-संग डेरापर चलह। ओइठाम पहिने किछु खाएब आ चाह पीब, पछाइत गप-सप्प करब।”

शारीरिको आ मानसिको तृप्ति दुनू गोरेकेँ भेटिये गेल, तँए एक्के स्वरमे दुनू गोरे बाजल-

“बड़बढ़ियाँ।”

डेरापर पहुँचते गोपालबाबू दुनूकेँ, माने मुनियो लाल आ

धुनियो लालकेँ दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसा अपने चापाकलपर पवित्र, माने अप्पन थाकल-ठेहियाएल शरीरो आ शरीरक भीतर मनोकेँ उर्जवान बनबैक प्रक्रियामे जुटि गेला। मुदा मन ओहू दुनू विद्यार्थीक क्रिया-कलाप देखि रहल छेलैन जे बच्चा अप्पन घर जकाँ बुझि, कोनो खगल काजकेँ पूर्तिमे लागल अछि आकि सोल्होअना हमरे दिस देखैए। भाय, दुनियोँ तँ दुनियाँ छीहे, सभकेँ बुझल अछिए जे जहिना धारक धारा पार करैमे कहल जाइए जे 'खोलू धरिया, उतरू पार, ऐ नदिक यएह बेवहार'। तहिना दोसर दिस ईहो कहले जाइए जे 'शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान'। आब अहाँ अगहन महिनामे खेतसँ पाकल धानक शीश आनि ओकर नीक जकाँ जुटिया साजि, मकरक मेलामे महादेव बाबाकेँ चढ़ा दइ छिऐन, तहिना बुझू।

नियमित परिवारमे, माने जँ परिवारक लोक परिवारक नियमकेँ बुझि अप्पन पारिवारिक जीवन बनबै छैथ, तँ ओ निश्चये परिवारक संचालन समुचित ढंगसँ आगू बढ़बै छैथ। गोपालबाबूक पत्नी, बुझू जे एक मैथिलानीक गुणसँ जहिना सम्पन्न छैथ तहिना मिथिलाक विधि-बेवहारसँ सेहो सम्पन्न छथिए। आब अहाँ कहब जे विधि-बेवहार तँ विधि-बेवहार छीहे, तैबीच मिथिला की? भोजपुरिया बरी कहियौ आकि अल्लापुरक बरी, बरी तँ बरी छी।

अपना मने बरी कहबै, तइले अहाँकेँ कियो डाँड़-बान्ह थोड़े करत, मुदा एते तँ कहबे करत जे भाय बरीक गाछ जनमैक जे बीजरूप अछि, माने हिन्दीक बीज, मैथिलीक बीआ वा बीहैन, ओकरा अल्लापुरसँ धर्मपुर तक, बिच्चैड़/बिच्चैन सेहो कहै छैथ। खाएर कियो अप्पन भाषाकेँ भाखा बना लेता। मिथिला बरीक जन्म स्थल छी, ऐठामक जे कमल फूल अछि, कमलक माने थल-कमलक नहि बुझब, पानिमे जे कमल फुलाइए, जेकर जड़िक सीरकेँ बिसाँढ़

कहै छिऐ, जे गरीबक आहार सेहो छी। ओही गाछक ऊपरमे बरी फड़ैए। दधीचि ऋषिक हड्डीसँ जहिना देवगण हथियार बना, राक्षसगणकेँ पराजित केलैन तहिना कमलक फूल अप्पन भोज्य विन्यास बनि, फल कहियौ कि फड़, बना अप्पन बरी नाम धरा बरीकेँ मानलैन। खाएर जे अछि से अछि मुदा मुनिलालो आ धुनीलालो जेना अप्पन चाह-जलखै बिसैर गेल तेना अप्पन प्रश्नकेँ नइ बिसरल। ओ दुनूक मनमे बेर-बेर उठिये रहल छेलै- ‘जग पीड़ित अछि दुखसँ आ जग पीड़ित अछि सुखसँ’। मुनीलाल बाजल-

“श्रीमान्, जग दुखो आ सुखोसँ जखन पीड़ित अछि, तखन लोक की भेल, दुखी आकि सुखी?”

मुनीलालक प्रश्न सुनि गोपालबाबूक मन मुस्की मारलकैन, मुदा मुँह खोलि हँसला नहि। बुझले अछि जे हँसी ओहन ठट्ठा छीहे, जे नीकोमे लोक हँसैए आ अधलोमे नइ हँसैए सेहो तँ सबहक आँखिक सोझेमे अछि, तँए एकरा झुठिआएलो नहियेँ जा सकैए। ..गोपालबाबू बजला-

“बौआ, आइ एतबे बुझह जे जहिना दुखक सीढ़ी बनल अछि तहिना सुखोक सीढ़ी बनल छइ। जहिना अनेको रंगक दुख अछि तहिना अनेको रंगक सुख सेहो अछि। दोसर दिन ऐसँ आगूक विचार करब।”

❑

शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

दुख-सुख

आइ पनरहम दिन छी, मुनीलाल-धुनीलाल आ गोपालबाबूक बीच गप-सप्प केना। जहिना प्रेमी-प्रेमिकाक बीच कहियौ आकि दू सहयोगी मनुक्खक बीच, भेँट भेला पछाइत, नइ भेँट भेने वा भेँटमे बिलम भेने छटपटाहट उठिते अछि, ऐठाम ई नइ बुझब जे केतौ दू सहयोगी आकि प्रेमीक बीच समुद्रक जुआरि जकाँ उठैत अछि जे हम जीतलौं तँ हम जीतलौं। के जीतलौं से तँ भविस कहत मुदा वर्तमानमे जीतक आशा अबिते अछि, खाएर जे अबैए आकि जाइए से जानए जअ आ जानए जत्ता, जानए प्रेमी-प्रेमिका आ जानए सहयोग-सहयोगी।

अदौसँ दुनियाँमे आश्चर्यक नमहर श्रृंखला अछिए। सभकेँ बुझले अछि जे गाछक रगड़सँ आगि उठि, नमहर-नमहर जंगलकेँ डाहि खेत बनौलक। अखनो पूर्वांचल देशमे, पहाड़ी-जंगली इलाकामे, झूम प्रथासँ खेती होइए। माने ई जे पहाड़ी जमीनपरक बोन-झाड़केँ डाहि, ओइसँ जे छाउर-राख होइए तैपर खेती करब। खाली आगियेक उत्पति भेने आश्चर्यक सीमा समाप्त भऽ गेल से बात नहि, आश्चर्यक नमहर श्रृंखला अछि। मुदा इतिहास रूपमे जइ श्रृंखलाकेँ देखै छिऐ तइसँ एकटा दोसरो आश्चर्यक श्रृंखला अछि। ओ अछि जे एक दिस जन्मेसँ बुझू, आ दोसर दिस गोटि-पंगरा चारि साए बर्खक मनुक्ख जे धरतीपर अछि तैठाम तक, माने खिच्चा उमेर भेल बीस बर्खसँ पूर्वक आ बीस बर्खसँ ऊपरक भेला डम्हाएलसँ बूढ़

धरि वा काँचसँ पाकल धरि। अन्तर बुझितो छी आ देखतो तँ छीहे, जहिना खिच्चा आमक चटनी बनैए आ जुआएल-डम्हाएलक अँचारो बनैए आ पकाकऽ सेहो, चोकरे सही, ओकरा लोक खाइए। तहिना मनुक्खोक तँ अछिए किने, बाल-बोधसँ चेष्टगर, सियान, जुआन आ अधबेसूसँ लऽ कऽ बूढ़ तक छथिए तँए सबहक, आन विचार जे हुअए मुदा जीवन तँ एक अछिए। सबहक अपन-अपन जीवन अछि। ओतेक जीवनक बीच केते गोरे जीवनकेँ जीवन बुझि जीब रहला अछि आ केते अजीवन बना जीब रहला अछि। यएह छी आश्चर्यक दोसर शृंखला, जे जीवन जीबिनिहारो जीवनकेँ सभ बुझि नहि पेब रहला अछि, ई आश्चर्यक घटना भेबे कएल किने। खाएर जे भेल आकि जे होइए, ओ दुनियाँ आ दुनियाँबला जानए। तइसँ गोपालबाबू आकि मुनीलाल-धुनीलालकेँ कोन मतलब छैन।

स्कूलसँ एला पछाइत, ओसराक कुरसीपर बैसल-बैसल गोपालबाबूक मनमे जगलैन, आइ पनरह दिन भऽ गेल मुनीलाल आ धुनीलालसँ भेँट भेना। ओना, स्कूलक क्लासमे दुनूकेँ देखै छिऐ, मुदा ने अपने किछु कहै छिऐ आ ने वैहसभ लग अबैए। जखन कोनो समस्या सोझामे अबैए तखन ने ओकरा समाधानक लेल समधानिकऽ समाधान करैबला उठिकऽ ठाढ़ होइए..।

लगले गोपालबाबूक मनमे तेसर विचार उठिकऽ ठाढ़ भेलैन। ओ ई जे अपने मन कहलकैन, दुनियाँमे सहयोगी वएह ने भेला जे सभ विचार, सहयोगीक, मानियेँ लैथ आकि नहियेँ मानैथ, मुदा दुनूक बीचक रस्ता पकैड़ जँ चलता तँ जीवन आइ ने काल्हि भेटबे करतैन। गोपालबाबूक मनमे तृप्ति जगलैन जइसँ श्रद्धा सेहो जगबे केलैन।

जहिना मुनीलाल तहिना धुनीलाल अपना-अपना मने सोचैत जे जइ विद्यालय (हाइस्कूल) मे गोपालबाबू शिक्षक छैथ, तइ

विद्यालयमे चारि साए विद्यार्थी अछि, तइमे एक गोटाक हिस्सा, माने छुट्टी समयक हिस्सा, मासमे एकाध घन्टा हएत, सएह ने हएत। तइमे जँ पनरह दिनसँ भेँट नहि केलिऐन तँ उचिते ने केलिऐन। भाय, चान-चकोरीक मिलानमे देखए पड़त ने जे एकटा अकासमे अछि आ दोसर धरतीपर। धरती-अकासक केते दूरी अछि से तँ जखन प्रकृतिक त्रिगुणात्मक चालि देखि अपनो चालि बनाएब तखन ने, मुदा से तँ धरती परक लोककेँ कठिन अछिए। एकर माने ई नइ बुझब जे यएह शक्ति राक्षसो नइ बनबैए, मनुक्खेटा बनबैए आ देवतो नइ बनबैए।

केना एक्के लोहाक रौकेटो बनैए, बन्दूको बनैए आ हँसुआ-खुरपी नइ बनैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे कहल जाए मुदा मुनियो लाल आ धुनियो लाल अपनामे विचारलक। विचारलक ई जे आइ दुनू भाँइ संगे गोपालबाबूक डेरापर चलू। जँ अपना सभकेँ समय भेटत तँ बड़बढ़ियाँ, समय भेटबक माने भेल जे जँ कियो दोसर गोटा हुनका लगमे हेतैन तखन तँ नहि, मुदा जँ असगरे हेता तखन किए ने समय भेटत, भेटबे करत। यएह सोचि दुनू गोरे स्कूलसँ एला पछाइत घरपर जा जलखै करिकऽ डेराक आगूक रस्ता धेने आबि जखन गोपालबाबूक दरबज्जा दिस तकलक कि गोपालबाबूकेँ असगरे बैसल देखलकैन।

जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल गोपालबाबूकेँ असगरे बैसल देखलकैन तहिना गोपालबाबू सेहो बाट चलैत बटोहीक रूपमे मुनीलाल आ धुनीलालकेँ देखलैन। देखिते मनमे भेलैन जे शोर पाड़िऐ, मुदा अपने शिष्टमन विचार देलकैन जे ई शिष्टाचारसँ अलग विचार भेल। शिष्टाचारसँ अलग विचार ई भेल जे अगर ओ (मुनीलाल-धुनीलाल) परिवार वा समाजक कोनो काज करैले जाइत हुअए तखन बीचमे बाधा पहुँचाएब भेबे कएल किने। दोसर ईहो तँ

अछिए जे आगूसँ केते बाजी? सभकेँ सभ बात अनुकूले नइ ने होइ छइ...।

मने-मन गोपालबाबू विचारिये रहल छला कि तैबीच मुख्य सड़कसँ उतैर दुनू गोरे गोपालबाबूक डेरा दिसक रास्ता पकड़लक। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, डेरा आ घर की भेल? डेरा ओ भेल जे किछु दिन रहैबला भेल, मुदा घर तँ से नहि छी, ओ तँ एक पीढ़ीक जीवनक कोन बात जे एक वंशोक रहैबला छी।

गोपालबाबूक दरबज्जासँ दस डेग आगूएसँ मुनीलाल आ धुनीलाल दुनू गोरे अपन-अपन हाथ जोड़ि प्रणाम करैत बाजल-

"प्रणाम गुरुदेव।"

ओना, 'गुरुदेव' सुनि गोपालबाबूक मन उड़िकऽ कबीरदासक साखीपर पहुँच गेलैन- 'गु अन्धिआरी जानिये, रु कहिये परकास। मिटै अज्ञानता ज्ञान ते, गुरु नाम है तास'। उड़ल विचारकेँ धरतीपर ठाढ़ करिते गोपालबाबूक मनक विचार बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे भरिसक दुनू विद्यार्थीमे नम्रताक उदय भऽ रहल छै तँए विनम्र शब्दक प्रयोग केलक अछि। कहलो तँ जाइते अछि जे फल्लाँ ऊपर जेहने श्रद्धा अछि तेहने विश्वास सेहो अछि। एक शब्दमे एकरा श्रद्धायुक्त विश्वास वा श्रद्धापूर्ण विश्वास सेहो कहल जा सकैए। खाएर जे कही मुदा एक हाइस्कूलक शिक्षकक जे रूप होइए तइ अनुकूल गोपालबाबू आशीर्वाद दैत बजला-

"रस्तापर तोरासभकेँ जखन दच्छिन मुहेँ बढ़ैत देखलियह तखन बुझि पड़ल जे कोनो काजे केतौ जा रहलह हेन, मुदा जखन रस्तासँ उतैर एमहर मुहेँ अबैत देखलियह, तखन बुझि पड़ल जे अहीठाम आबि रहल छह।"

बालमन मुनियो लाल आ धुनियो लालक तँए निष्कपट विचार

व्यक्त करैत दुनू संगे बाजल- “गुरुदेव, जहिया अपनेक डेरापर आबि जीवनक गप-सप्प केलौं, तहियासँ मन उबियाइये रहल अछि जे दोसर दिन फेर जाइ, मुदा अपने तँ चारि साएसँ ऊपरे विद्यार्थीक गुरु छिऐन, तैठाम अप्पन हिस्साक समये केते अछि, तइ दुआरे नइ अबै छेलौं।”

दुनू गोरेक विचार सुनि गोपालबाबू आह्लादित भेला। आह्लादित होइते मनमे उठलैन जे जरूर दुनूक मनमे जीवनक जिज्ञासा अछि। ओना, जिज्ञासा रंग-रंगक होइ छै, जे सभक मनमे रहितो अछि आ जगितो तँ अछिए, मुदा जीवनक जिज्ञासा जागब सभसँ बेसी नीक भेल। दुनियाँमे रहैक इच्छा खाली पंचभौतिक मनुक्खेटा कैँ नहि, धरतीपर जनमल जीवमात्रक इच्छामे सन्निहित रहैत अछि, जखन कि ईहो जनैए जे जखन धरतीपर जन्म लेलौं तखन मरब अनिवार्य अछिए। बुझल अछिए जे राम सन बेटा रहितो दशरथ मरि गेला, माने रामो बँचा नहि सकलैन। कृष्ण सन मामा, अर्जुन सन पिता, तखन अभिमन्यु काँचे उमेरमे मरि गेला। अखन महाभारतक चर्च करैक समय नहि अछि जे कहितौं, केना श्रीकृष्ण आ पाण्डव अमरकंका गेला आ पद्मनाभ केना द्रोपदी हरण केलक। केना दुनूक बीच लड़ाइमे पाण्डव हारल आ कृष्णक कहलापर पुन: लड़ाइ भेलापर जीतलक...। दुनू गोरेक विचार, माने मुनियो लाल आ धुनियो लालक विचार, सुनि गोपालबाबूक मन सवुरा गेलैन। सवुराइक कारण भेलैन जे नम्मा[2] क्लासक बच्चा ऐसँ बेसी सोचिये की सकैए, तँए प्रश्न पुछबसँ नीक हएत अप्पन उत्तर देब। विचार शैलीकैँ बदलैत गोपालबाबू बजला- “बौआ, आरो की हाल-चाल?”

‘हाल-चाल’ सुनिते दुनूक मनमे विचारक बीआ अंकुरि गेल।

---

[2] **नौमा**

जइसँ दुनू गोरे संगे बाजए लगल। एक संग दुनू गोरेकेँ बजैत देखि गोपालबाबू दुनूक मुहकेँ हाथक इशारसँ चुप करैत बजला- "बेरा-बेरी दुनू गोरे बाजह।"

ओना, दुनूक मुँह चुप भऽ गेल मुदा पहिने बजैले दुनूक मन लुसफुसाइते छल। गोपालबाबूक मन भीतरे-भीतर जुड़शीतलक शीश चढ़ल नीर पेब जुड़ाइये रहल छेलैन, मुदा अपनाकेँ संयमित कऽ लेलैन।

जहिना मुनीलाल बजैमे फरकोर तहिना चटपटिया सेहो अछि। मुदा धुनीलालमे से गुण नइ छै, असथिरसँ बजैक स्वभाविक कला छइ। हलबलाकऽ मुनीलाल अप्पन विचार पहिने रखैत बाजल-

"गुरुदेव, सुख की आ दुख की?"

मुनीलालक प्रश्नकेँ गोपालबाबू मनक डायरीमे पहिल नम्बरमे नोट केलैन।

तैबीच मुनीलालकेँ प्रश्न उठौला पछाइत विराम लइते धुनीलाल बाजल- "गुरुदेव, प्रकृतिक त्रिगुणात्मक शक्ति की छिऐ?"

दुनूक प्रश्न सुनि गोपालबाबू मने-मन विचारकेँ समतुल्य बनबैत बजला-

"ओहिना अछि जहिना जीवन-मृत्यु अछि।"

बजैक क्रममे गोपालबाबू बिच्चेमे चुप भऽ गेला। चुप होइक कारण भेलैन जे जखन पाछू उनैट विचार दिस तकलैन तखन अपने मन मानि लेलकैन जे बहुत अधिक प्रश्न सामनेमे उठि गेल अछि। भाय, बड़का बैंकमे ने मोटका पाइक गिनती होइए, मुदा जैठाम पाइ-पाइक उपार्जन-खर्चक हिसाब अछि, तैठामक परिस्थितियो तँ अलग हेबे करत। मने-मन गोपालबाबू जखन प्रश्नक अँटकार लगौलैन कि अपने मनमे अँटकए लगलैन जे एक दिस जीवनक

सुख-दुख आ दुख-सुखक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस प्रकृतिक त्रिगुणात्मक शक्तिक, तहिना एक दिस जीवनक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस जीवनक उद्देश्यक सेहो हेबे करत।

पोखरिक पानि जकाँ गोपालबाबू अप्पन मनकेँ थीर केलैन। तइ बिच्चेमे मुनीलाल बाजि उठल-

"गुरुदेव, पहिने सुख-दुखक चरचा करियौ, पछाइत दुखो-सुखक आ आनो-आन प्रश्नक विचार करब।"

मुनीलालक विचारमे गोपालबाबूक अपनो विचार मीलि गेलैन। मीलि ई गेलैन जे जहिना बून-बून पानिसँ सागर बनल अछि तहिना बून-बून जीवनसँ ई संसार, तखन ओइ बीचसँ बूनकेँ निकालब बाल-बोधक खेल नइ ने छी। मुदा जखन बालमनमे कोनो विचार उठल अछि तखन ओकरा सोझे झाँपब ओहिना होइए जहिना धधकल आगिकेँ माटि-गर्दासँ झाँपब होइए। नअम वर्गक दुनू विद्यार्थी छी, कनी-मनी संस्कृतो पढ़िते अछि तँए नीक हएत जे संस्कृतेक श्लोकसँ अप्पन विचार उठाबी। ई तँ बढ़ियाँ विचार छीहे जे अप्पन संस्कार, संस्कृतिकेँ स्मरण करबैत जीवन आ जीवनक उद्देश्यक चर्च कएल जाए, तँ ओ हिमालयसँ निकलल जलधारासँ पत्थरकेँ सिंचैत धरतीक मुँहमे सेहो अमृत दइते अछि। गोपालबाबू बजला-

"सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता

परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।

अहं करोमीति वृथाभिमानः

स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः॥"

सुख-दुख केकरो कियो दइ नइ अछि। ई मानब जे दोसर कियो दोसराकेँ दइए, यएह कुवुद्धि छी। महावीर सेहो कहने छैथ जे आत्मे सुखक कर्ता छैथ आ आत्मे दुखोक कर्ता छैथ।

बजैक क्रममे गोपालबाबू भाव विह्वल भऽ कऽ बाजि गेला मुदा पाछू उनैट जखन अप्पन विचारकेँ टोबलैन तखन बुझि पड़लैन जे बेसी अगुआकऽ बाजि रहल छी। जहिना महाभारतक रणभूमिमे कृष्ण सातो घोड़ाक रथकेँ एक्के बेर छोर पकैड़ तानलैन तहिना मने-मन अपन विचारक प्रवाहकेँ एक्केबेर तानैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ सभ, अहिना सम्बन्ध बनौने रहह। जहिना दुनियाँ अथाह अछि तहिना मनुक्खो तँ थाह लइले तैयारे अछि। अहिना अबैत-जाइत रहह, किछु-किछु गप-सप्प होइत चलतै। ओना, गप-सप्पक आड़ि-धूर नइ अछि, मुदा जीवनक धारमे ओकरा अड़ियाएले जा सकैए।”

‘अबै-जाइ’ दे सुनि जहिना मुनीलालक मनमे जिज्ञासा जागल तहिना आशाक जिज्ञासा धुनीलालक मनमे सेहो जागल। धुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, सभ दिन आएब।”

अप्पन निर्धारित समय व्यक्त करैत गोपालबाबू बजला-

“स्कूलक समय स्कूलमे बितैए, बाँकी समय हम डेरेपर रहै छी।”

❑

शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की

संयोग कहियौ आकि समयक गति, जहिना गोपालबाबूक मन तृप्तिसँ तिरपित, मुनीलाल आ धुनीलालसँ बनैत सम्बन्धसँ भऽ रहल छैन तहिना मुनीलाल आ धुनीलालकेँ गोपालबाबूसँ सम्बन्धमे प्रियता ऐने मनमे तृप्ति सेहो जागि रहल अछि।

अन्हार-इजोतक बीच सिमानपर जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल ठाढ़ भेल, भकजोगनीक लीला सदृश, दुनूक मनमे कखनो अन्हारसँ इजोत आ कखनो इजोतसँ अन्हार सेहो आबए लगल। स्वभाविको अछिए। जखन जीवनमे कोनो आवश्यक काज अबैए, तखन ओकर क्रियमाण रूप बनबैक प्रक्रिया शुरू होइए। से होइए दुनूक धरातलपर। विचारक[3] धरातलपर सेहो आ जीवन भूमिपर सेहो। खाएर जे होइए तइसँ गोपाले बाबू आकि मुनिये लाल-धुनिये लालकेँ कोन मतलब अछि, मतलब अछि जहिना गोपालबाबू मने-मन रत्नक प्राप्ति देखि रहला अछि तहिना मुनीलाल आ धुनीलाल सेहो अपन-अपन जीवनक प्राप्ति देखि रहल अछि।

विचार-विमर्श केलाक बाद जखन मुनीलालो आ धुनियो लाल गोपालबाबूक ऐठामसँ विदा हुअ लगल तखन जहिना मुनीलाल-धुनीलालक मनमे तहिना गोपालबाबूक मनमे सेहो प्राप्तिक कारुणिक सम्वेदना जागि गेलैन। जीवन 'जीवन' छी, ठठ्ठा नहि,

[3] **भाव-जगतक**

सात अरब लोकक बुद्धि-विवेकक बीच जीवन अखनो पहेली बनले अछि, मुदा कियो थाह नहि पेब रहला अछि। सएह छी जीवन? जीवन बहुत पैघ विज्ञान छी, सदैत ओकरा बुझैक परियास करब अछि। जे कियो जीवनकेँ जानि लेलैन, तिनका लेल जीवन वरदान बनि गेलैन अछि आ जे जीवनकेँ नहि जानि सकला अछि, हुनका लेल जीवन अभिशाप बनले छैन।

रातिमे खेनाइ खेलाक बाद गोपालबाबू जखन ओछाइनपर पहुँचला कि धक-दे मुनीलाल आ धुनीलाल मनमे नाचि उठलैन। नाचैत मनमे कबीरदासक पाँती उतरलैन-

“गुरु तो ऐसा चाहिये, शिष से कुछ न लेय।

शिष तो ऐसा चाहिये, गुरु को सब किछु देय।”

पाँतीक शब्द मनमे उतरैत-उतरैत गोपालबाबूक हृदय पसीज गेलैन। जखन जिज्ञासु लोकक जिज्ञासा जगैए, तखन पथ-प्रदर्शनक लेल पथ-प्रदर्शकक खगता भइये जाइए। जँ अप्पन जिनगीक संग दोसरोक जिनगीकेँ जिनगी बना सकलौं तँ यएह छी दुनियाँक सभसँ पैघ कारीगरी। एकाएक गोपालबाबूकेँ जेना जीवनक एकटा जड़ी भेट गेलैन तहिना बुझि पड़लैन। सभ कियो देखियो रहलौं हेन आ बाजितो तँ छीहे जे जीवनक बीज रूप देखी। इतिहासकार सेहो एकटा कालक नाम ‘बीजवपन काल’ लिखिकऽ कहिते छैथ। जइसँ एकटा काल ठाढ़ भइये गेल अछि।

एक दिस जहिना गोपालबाबूक मनमे मुनीलाल आ धुनीलाल नाचि रहल छेलैन तहिना मुनीलाल आ धुनीलालक भावभूमिमे कबीर दासक पाँतीक भाव सेहो भवित भऽ रहल छेलइ। कबीरदासक ओ पाँती- ‘साँचे गुरु के पक्ष में, मन को दे ठहराय। चंचल से निश्चल भया, नइ आवे नइ जाय।’

एक दिस ओछाइनपर पड़ल जहिना मुनीलाल-धुनीलालक मन कछमछा रहल छल, तहिना दोसर दिस गोपालबाबूक मन सेहो कछमछा रहल छेलैन। ओना, जेहेन एकाग्रताक अभ्यास गोपालबाबूक बनि गेल छैन से मुनीलाल-धुनीलालकेँ नहियेँ बनल अछि, तँए दुनियाँ देखैक नजैरमे अन्तर छइहे।

संयोग कहियौ आकि समयक गति, काल्हि रवि दिन छी, जहिना गोपालबाबू सोल्होअना काजसँ माने ड्यूटीसँ, छुटनगर रहता तहिना मुनीलाल आ धुनीलाल सेहो रहत। गोपालबाबूक ओ विचार, दुनू गोरेकेँ मोने छै जे कहने छथिन- ‘छुट्टी दिनक समय स्वाधीन अछि, तँए जखन इच्छा हुअ तखन आबि सकै छह’। अपना मनकेँ दुनू गोरे, माने मुनियो लाल आ धुनियो लाल अप्पन विचारसँ कौल्हुका आशापर जीह जाँति, सुति रहल।

भोर होइते मुनीलाल धुनीलालक ऐठाम पहुँचल। मुनीलालकेँ देखि धुनीलाल अप्पन विचारकेँ धुनैत बाजल-

“भाय, भने आइ छुट्टीक दिन छी, जहिना गोपालबाबू छुटनगर हेता तहिना अपनो सभ छीहे। तँए ओहीठाम, माने गोपाले बाबूक ऐठाम चलब बेसी उपयोगी हएत।”

ओना, गोपालबाबूक अप्पन रूटिंग छैन, मौसमक हिसाबसँ ओ अप्पन जिनगी बनौने छैथ। जहिना गरमी मासमे कपड़ा (देहक कपड़ा) जेते मैल-कुचैल होइए तेते जाड़क मासमे नहियेँ होइए। दोसर, जँ गरमी मासक मौसमकेँ अनुकूल बना, अप्पन जीवनक आवश्यक काजकेँ पूर्ति कएल जाए तँ ओ बेसी नीक होइते अछि। यएह सोचि गोपालबाबू गरमी मासमे भोरे-भोर, अपन कपड़ा धोइ छैथ।

अप्पन नियमित समयानुसार गोपालबाबू दरबज्जाक

कुरसीपर बैसल दुनियाँ दिस, माने आगू दिस टक लगाकऽ देखि रहल छला, की मुनीलाल आ धुनीलालकेँ मुख्य सड़कसँ उतैर डेरा दिसक रास्ता पकैड़ सरसराएल चलि अबैत देखलैन। गप-सप्प करैक मन अपनो बनल रहबे करैन, दुनू गोरेकेँ देखि मन जुड़शीतल जकाँ जिरा गेलैन।

ओना कनी फरिक्केसँ मुनीलाल, गोपालबाबू दरबज्जाक आगू कपड़ा पसारैले जे ढाठ देने छथिन, तैपर नजैर दौड़ा रहल छल। दौड़ा ई रहल छल जे भरिसक गोपालबाबू औझुका काज सूर्य उगैसँ पहिनहि पूरा कऽ चुकल छैथ। माने ई जे अधिकतर नोकरिहारा, ओहन नोकरिहारा जे अपना हाथे अप्पन देहक उपयोगी वस्त्र साफ करै छैथ, जे अनका हाथक धोअल कपड़ा पहिरै छैथ तिनकर चर्च नहि, गोपालबाबू सन शिक्षकक चर्च कऽ रहल छी। बजैक क्रममे तँ सभ शिक्षक बजिते छैथ जे हम सभ एक छी, मुदा काजक घटी-बढ़ी अछि कि नहि अछि, से अपने मुहेँ बाजैथ। गोपालबाबू सन लोक गोपाले बाबू टा नइ छैथ, समाजमे बहुतो छैथ। सभ गुणसँ आगर, भगवान जकाँ भलेँ नहि छैथ, मुदा खुदरा गुण, खुदरा माने एक-दू-तीन-चारि गुण-सँ आगर नहि छैथ, सेहो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। छन्ठा पंडीजी गाममे छैथ, तीन बजे भोरमे ओ पूजा करै छैथ। अहाँ कहब जे तीन बजे तँ राति भेल, तखन औझुका पूजा केना भेल? अहाँक विचार ओ थोड़े मानता, ओ अप्पन मन-बुद्धि-विवेकक संग अप्पन आत्मारामक भक्त सेहो छैथ, तँए ओ नहियेँ मानता। हुनकर मान्यता छैन जे तीन बजेसँ, माने रातिक अन्तिम पहरसँ, राति दिनमे बदलए लगैए। तँए तीन नहि, पौने तीनिये बजेमे उठि, अप्पन देहकेँ स्वच्छ बनबैत अपने जहिना पूजापर बैस जाइ छैथ, तेहने पत्नियोँ छैन। पंडीजी केँ पूजापर बैसैसँ पहिनहि पूजाक सभ ओरियान लक्ष्मी कऽ दइ छथिन। पूजा समाप्त भेला पछाइत

धुपकाठी सेहो समाप्त भऽ जाइ छैन, तँए धुपदानीकेँ सभसँ पहिने राखि, कौल्हुका काज, माने अधिकांश लोक आठ-नअ बजेमे पूजा करै छैथ, तिनका हिसाबे कौल्हुका काज भेबे कएल किने, से ओ आइये कऽ लइ छैथ। केनिहारक आगूमे कबीर बाबा कनी पछुआ जाइ छैथ, पछुआ ई जाइ छैथ जे जीवन-क्रिया औझुका दिससँ शुरू करी आकि कल्हुका दिससँ। काल्हि माने दुनू भेल- अबैयोबला आ गेलहो। खगता दुनूक अछि। खाएर जे अछि।

दरबज्जाक ढाठपर गोपालबाबूक पसरल कपड़ा दिस मुनीलाल आँखि गड़ाकऽ देखए लगल। देखलक गोपालबाबूक अप्पन औझुका दिनक बेवहारकेँ। मनमे उठलै, एते तँ गोपालबाबूक आशीर्वाद सिरपर चढ़िये गेल किने जे अनकासँ भिन्न अप्पन बेवहारमे सुधार केलौं। स्कूल जाएब छोड़ि बाँकी कोनो काजे जँ कतौ जाइ छी, तँ माए-बाबूक जानकारीमे अवश्य दऽ दिऐन। एहेन नहि जे कोनो बात महिना दिनक पछाइत माए-बाबू बुझैथ।

एक दिस मुनीलालक आँखि कपड़ापर अँटकल छैलै आ दोसर दिस दुनू पएर, दरबज्जा दिस बढ़ि रहल छेलइ। लग्गा भरि पहिनहि मुनियो लाल आ धुनियो लाल अपन-अपन दुनू हाथ जोड़ि, जेना किछु मंगैले आएल हुअए, तहिना गोपालबाबूक लगमे पहुँच बाजल-

"गुरुदेव, आइ रवि दिनक अवकाश दुआरे...।"

मुनीलालक पेटक बात मुहसँ नीक जकाँ निकललो ने छल कि बिच्चेमे गोपालबाबू बजला-

"बौआ, पहिने आँगन जा चाचीकेँ कहुन जे चाह पीबैक मन होइए।"

ओना, आँखिक देखल सेहो झूठ होइ छै, जे आँखिक सोझमे

सभकेँ अछिए, देखिते छी। गोपालबाबूक पत्नी- सुशीला, गोपाल-बाबूक परम भक्त। ओना, भक्तो चारि रंगक होइए। से नहि, पति-पत्नीक बीचक सम्बन्धक अनुकूल। परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे जइ खेत-पथार ले समाजमे दिन-राति गारि-गरौऐल, मारि-पीटि होइ छल, ओ खेते आइ मूल्यहीन भऽ गेल अछि। गाम-शहरक बीचक जीवनक बीच खेत-पथारक दशा सबहक बीच अछिए। एकर माने ई नइ बुझब जे भाए-भैयारीक संग माए-बहिन अखनो अप्पन ठोरपर रखनहि छैथ जे हम सभ दुनियाँक गुरु छी। खाएर जे से..।

कुशल-समाचार भेला पछाइत सभकियो, माने गोपालो बाबू आ मुनियो लाल-धुनियो लाल, त्रिकोण जकाँ एकठाम कुरसीपर बैसला। गोपालबाबू बजला-

“बौआ, तोरा सबहक कौल्हुका प्रश्न उधारी लगल छह, तँए पहिने ओकरे जवाब दइ छिअ।”

दुनू गोरे, माने मुनियो लाल आ धुनियो लाल कौल्हुका प्रश्न मने-मन ताकए लगल। मुदा मोन नहि पड़लै। धुनीलालक मनमे दोसरे प्रश्न उपैक गेल। कनी-मनी निधोक भइये गेल अछि, किए तँ सम्बन्ध बढ़लासँ जे गुण होइए, तइ अनुकूल। तँए, बिना कोनो लागि-लपेटे-क धुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, अपना गाममे देखै छी जे साँप कटै छै तँ कियो लहेरियासराय जा बीख उतरबाबैए आ कियो झाड़े-फूकसँ उतरबाबैए, आ कियो विसहारा गहवरमे जा ढोल-मिरदंग बजा, मनुक्खदेवाक वचनसँ बीख झड़बाबैए।”

आगू बजैले धुनीलालक मनमे रहबे कएल छल तइ बिच्चेमे गोपालबाबू रोकैत कहलखिन- “बौआ, द्वन्द्व भरल दुनियोँ अछि आ समाजो अछि। तँए अखन ओइ सभकेँ नजैरसँ हटा, पैछला प्रश्नपर

आबह जे जीवनक की उद्देश्य हेबा चाही?”

जहिना मुनीलाल तहिना धुनीलाल हरिणक बच्चा जकाँ दुनू कान ठाढ़ केलक। दुनूक एटेनशन देखि गोपालबाबू बजला- “बौआ, पहिने शीर्षक रूपमे एक शब्दमे सुनि लएह, पछाइत बुझै-जोकर व्याख्या कऽ देबह।”

प्रश्न-उत्तरक बीच मुनीलाल आ धुनीलालक मनमे मिसियो भरि शंका नइ रहल। मन मानि गेलै जे गुरुदेव जे किछु कहता से गुण ग्रहण जरूर करब।

गोपालबाबू बजला- “ज्ञान, दर्शन आ चरित्रक सामंजस्य एहेन हेबा चाही जे समन्वित होइत चलए, जइसँ संकल्पित जीवन बनि अप्पन उद्देश्य बनबैक शक्ति ओकरा अपनेमे जागि जाइ। यएह त्रयी जीवनक लेल अमूल्य रत्न छी।”

भक-चकमे जहिना लोकक आँखि काजो करैए आ नहियोँ करैए, तहिना मुनियो लाल आ धुनियो लालक मनमे चक-भकी उठि गेल।

ओना, दुनू गोरे हाइस्कूलक नम्मा क्लासमे पढ़िते अछि। दुनियोँक जानकारी किछु-ने-किछु अबिते छइ। मुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

गोपालबाबू बजला- “बौआ, हाइस्कूलमे शिक्षकक पदपर अपने नोकरी करै छी। आठ घन्टा ड्यूटी करैक कहाबद्धी अछि। बाँकी चौबीस घन्टामे सोलह घन्टा जे बँचैए, ओ अप्पन सम्पैत छी, जेकरा हम अमूल्य बनौने छी। तँए, जखन मन हुअ तखन आबिकऽ बुझह।”

‘अमूल्य’ सुनि जहिना मुनीलालक तहिना धुनीलालक कान नव सिरासँ ठाढ़ भेल। नव सिरासँ दुनू गोरेक कान ठाढ़ होइत देखि

गोपालबाबू बजला- “बौआ, ज्ञान हमर माथ छी, दर्शन हमर हृदय छी आ चरित्र अप्पन हाथ-पएर छी। शारीरिक रूपमे तीनूक योग अछि आ तीनू मिलकऽ समन्वित रूपमे काज करैए। ओना, समाजक बीच देखिते छहक जे जहिना बजैमे विषमता अछि, माने ई जे किछु लोक झूठ नइ बजै छैथ, किछु लोक आधा-छिधा झूठो आ सत्यो बजै छैथ आ यएह आधे-छिधा बीचमे झमेल ठाढ़ केने अछि।”

ओना, गोपालबाबूक मनक विचार ने मुनीलाल बुझि रहल छल आ ने धुनीलाल, मुदा ‘झमेल ठाढ़ केने अछि’ सुनि मुनीलाल बाजल-

“की झमेल ठाढ़ केने अछि?”

हँसैत गोपालबाबू बजला-

“आधा झूठ दिस अछि आकि सत्य दिस से आइ जाइ जाह, आन दिन कहबह। जखन मन हुअ तखन आबि जइहह। गप-सप्प चलैत रहतै।”

मुनियो लाल आ धुनियो लाल, दुनू गोरे गोपालबाबूकेँ प्रणाम करैत विदा भेल।

❑

शब्द संख्या: 1571, तिथि: 10 अक्टूबर 2023

अंधविश्वास

गोपालबाबू आ मुनीलाल-धुनीलालक बीच जे सम्बन्ध बनि रहल अछि, ओ एकटा नव भावभूमिक सृजन सेहो कइये रहल अछि। अखन तक सभ जनै छी जे जहिना एक सीमापर अकास अछि आ दोसर सीमापर धरती अछि, अखन तेसर सीमा पतालक चर्च नइ करै छी, मुदा दुनूक बीच स्थायी रूपसँ स्नेहिल सम्बन्ध कहियौ आकि प्रिय सम्बन्ध सेहो अछिए। कहब जे स्नेहिल सम्बन्ध की अछि? हँ, प्रश्न तँ अछिए, मुदा दुनूक बीच दू तरहक सम्बन्ध अछि, एक तरहक सम्बन्ध अछि जे जँए धरती अछि तँए अकासो अछि। एकरा ओहुना कहि सकै छी जे अकास अछि तँए धरतीक अस्तित्व सेहो अछि। जहिना एक्के शरीरमे शरीर रूपी धरती अछि तहिना अकास रूपी मन, बुद्धि आ विवेकक संग आत्मा सेहो अछि। खाएर अखन से नहि, जइ धरती-अकासकेँ साधारण आँखिसँ देखै छी, तइमे एते तँ देखबे करै छी जे धरती निच्चाँ अछि आ धरतीसँ ऊपर असीम तक अकास अछि।

दुनूक बीच माने धरती-अकासक बीच पुल रूपमे कहियौ आकि भाव जगतक भवैत भाव-सम्बन्ध रूपमे कहियौ, ओ एकटा नव भाव भूमिक सृजन करिते अछि। खाएर जे करैए ओ भाव-भूमिक भावुकक जगतक भावना भेल, तइसँ गोपाले बाबू आकि मुनिये लाल-धुनीलालकेँ कोन मतलब छैन। जहिना सभकियो अकासक निच्चाँ धरतीपर ठाढ़ छी, तहिना ओहो तीनू गोरे एक्के

अकासक निच्चाँ धरतीपर ठाढ़ छैथ। गोपालबाबू जइ हाइस्कूलक शिक्षक छैथ तही हाइस्कूलमे मुनीलाल आ धुनीलाल नवम वर्गक छात्र छी।

अकास-धरतीक बीच जहिना पुल रूपमे कहियौ आकि सम्बन्ध रूपमे, सम्बन्धो अछि आ सम्बन्ध नहियोँ अछि, एकरा तँ दूरी कहले जा सकैए। भलेँ एक्के प्रकृतिक सृजन किए ने कहल जाए, मुदा ओहू सृजनमे सत, रज आ तम अपन-अपन करामात करिते अछि, जेकरा त्रिगुणात्मक शक्ति सेहो कहिते छिऐ। ओना, एहेन गुण तँ ओहू शक्तिमे अछिए जे ‘राजा’केँ ‘रंक’ आ ‘रंक’केँ ‘राजा’ सेहो बनैबतो अछि आ बिगाड़ितो तँ अछिए। बरखा हेबाकाल जहिना धरतीपर सँ लऽ कऽ अकास धरि, एकरूप भऽ जाइए, तहिना हवा आ रौदक माध्यमसँ सेहो अछि। ओना, दुनूक सम्बन्ध जहिना साधक अछि तहिना साध्य सेहो अछिए। एकरा द्वन्द्व कहबै आकि सम्बन्ध, ई विचारणीय प्रश्न तँ अछिए। आजुक वैज्ञानिक आधारपर एते तँ मानिते छी जे रंग-बिरंगक हवाक पुलपर अकास धरतीपर ठाढ़ अछि। ओना, धरतियोक ठौर-ठेकान नहियेँ अछि। भूगोलवेत्ता सभ सेहो अदौसँ कहैत एला हेँ जे धरती गोल अछि जइसँ सभ किछु गोल अछि। तखन अकास केहेन अछि? अकासकेँ शून्य मानि सुनसान बुझि लिअ। सुरुजो गोल, तरो-तरेगनो गोल आ चानो तँ गोल अछिए। एहनो तँ भइये सकैए जे अप्पन आँखिये गोल हुअए जइसँ सभ किछु गोले-गोल देखि पड़ैत हुअए। जहिना दुनूक बीच, माने अकास आ धरतीक बीच, हवाक गति-विधि अछि तहिना रौदोक, माने सूर्यक प्रकाशक सेहो अछिए। एक तँ ओहुना देखबो करै छी आ मानितो तँ छीहे जे चौबीस घन्टामे बारह घन्टाक दिन होइए आ बारह घन्टाक राति, ऐठाम ई नइ बुझू जे ओहू बारह घन्टामे कमी-बेसीकेँ देखबए चाहै छी। ओ तँ सोझमे अछिए जे

माघक दिन जहिना दुबराकऽ पिल्ली भऽ जाइए तहिना बैशाख-जेठक दिन अगिगर खलीफा नइ बनैए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो देखितो छी आ मानितो तँ छीहे। ओना, राति-दिनक बँटवारामे सेहो बेइमानी अछिए। जहिना समुद्र मथन भेलापर देवतालोकनि अमृतक बँटवारामे केलैन तहिना राति-दिनमे सेहो भेले अछि। एहनो जगह (स्थान) अछि जैठाम सूर्जक रोशनी (प्रकाश) एते दिनक पछातियो, एते दिनक माने भेल जहियासँ सूर्य भेला, नहि पहुँचल अछि, तँए सूर्योकेँ दुनियाँ देखैक लिलसा अखनो धरि छैन्हे। ओना, अहाँ ईहो कहब जे सुरुजेसँ ने धरतियो बनल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह। सूर्य अप्पन प्रकाश जँ नब्बैये डिग्री अक्षांश तक रखता तँ राखथु, ओ हुनकर मन-मर्जीपर अछि।

दुनियाँ जहिना समतासँ भरल अछि तहिना विसमतासँ सेहो भरले अछि, अही समता-विसमताक बीच गोपालो बाबू छैथ आ मुनियो लाल-धुनियो लाल अछि। जहिना अपना सभ सुनबो करै छी आ मुहसँ बजितो तँ छीहे जे 'कुमुदनी जल में बसै, चन्दा बसे अकास, जो जाही के भावना सो ताही के पास'। एहेन बात चन्दे आ कुमुदनीए टाक नहि अछि, गोपालबाबू आ मुनीलाल-धुनीलालक बीच सेहो बनि रहल अछि।

प्रियता आकि अप्रियता जहिना मनकेँ खोधैत रहैए तहिना गोपालो बाबू आ मुनियो लाल-धुनियो लाल, ऐठाम धुनीलालक माने कबीर नइ बुझब, किए तँ ओहो धुनिये वंशक छला। खाएर अखन वंशक वंशलोचनक बात नइ कहब, अखन मुनीलाल-धुनीलाल आ गोपालबाबूक कहै छी। गोपालबाबू हाइस्कूलक शिक्षक छैथ आ मुनीलाल-धुनीलाल, शिष्य कहियौ कि शिक्षार्थी कहियौ आकि छात्र-विद्यार्थी, से अछि। ओछाइनपर पड़ल गोपालबाबूक मनमे उठलैन जे आइ जँ मुनीलाल-धुनीलाल औत तँ पहिने अप्पन ओकातिक

परिचय देब आवश्यक अछि। किए तँ लोक लोके ने छिआ, जँ कोनो मीठगर विचार कियो बाँटै छैथ तँ बखरा लेनिहारक मनमे स्वाभाविक रूपसँ उपकिये जाइए जे हिनका लग, बँटनिहार लग, मीठक ढेर लागल छैन, कुबेरक खजाना जकाँ कहियो ने सठत। भलेँ लाखो बरख पूर्वसँ अबैत मनुक्खक जीवन किए ने आइयो अभावग्रस्त, माने अन्न-वस्त्र लेल सेहो ललाइत हुअए.! ओछाइनेपर सुतल-सुतल गोपालबाबू संकल्पित भऽ गेला।

एमहर बाल-बोध मुनीलाल आ धुनीलाल रमचेलबा जकाँ अछिए, तहूमे परिवारक भारसँ सोल्होअना मुक्त अछि, भोरे-भोर विचारलक जे केना अपनासभ सन-सन लोक भरि दिनक उपास पाबैन करैए, तहिना अपनो सभ करब। गोपालबाबू ऐठामसँ आबिकऽ किताबक झोरा लेब आ स्कूल चलि जाएब, खाए नइ लगब। यएह सोचि दुनू गोरे गोपालबाबू ऐठाम पहुँचल।

गोपालबाबू अप्पन पेटक बात बजैक विचार मने-मन तँइ कऽ चुकल छला, तँए मन हलसल-कलशल रहबे करैन। ऐठाम ई बुझू जे समाजमे सभ इमानेदारे छैथ मुदा अप्पन कमाइक आमदनी बजै बरेमे झूठ बजबे करता। स्वाभाविके अछि, इजोरिया पखमे चोरो चोरी केना छोड़ि दइए जे इजोतमे लोक चिन्ह लेत। माने चोरो साधुए छी। तखन समाज तँ समाजे भेला।

मुनीलाल आ धुनीलालकेँ देखि गोपालबाबूकेँ जेना भेलैन जे अप्पन आश्रमकेँ[4] किए ने व्रह्मचारी-आश्रम सन बनाबी। ऐठाम एकटा भ्रम अछि जे व्रह्मचारीक परिभाषेमे खट-रस फेंटल अछि। खाएर जे अछि, नियमो तँ नियम छी, मुनीलाल आ धुनीलाल अप्पन नियमानुसार दू लग्गा फरिक्केसँ दुनू हाथ जोड़ि बाजल- “प्रणाम

[4] **परिवारकेँ**

गुरुदेव।”

हलसैत गोपालबाबू बजला- “बौआ, बेरपर बेगरताक पूर्ति भेलासँ जहिना मन तिरपित होइए तहिना आइ अप्पन मन तृप्त अछि।”

गोपालबाबूक तिरपित मन देखि मुनीलाल बाजल- “गुरुदेव, आइ अपने दहिन छी, तँए हमरो दुनूकेँ..?”

तैबीच गोपालबाबूक पत्नी जलपान (जलखै) नेने पहुँच गेली। पत्नीक हाथमे जलखै देखि गोपालबाबू बजला-

“भूखे भजन न होई गोपाला। पहिने सभ कियो जलखै कऽ लएह, पछाइत दू घन्टा गप-सप्प होइत रहत। तेकर बाद स्कूल जेबाक तैयारी हमहूँ करब आ तोहूँ सभ करिहह।”

जलखै केलाक बाद चाह पीबिते गोपालबाबू सवाल-जवाब करैले तैयार होइत बजला-

“बौआ, तोहर सभक प्रश्न ‘अंधविश्वास की छी’ तेकर उत्तर पछाइत देबह। पहिने अप्पन विचार कहि दइ छिअ।”

गोपालबाबूक विचारक लावण्यता जेना दुनू गोरेकेँ, माने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ, मोहि लेलक तहिना वातावरण पूर्ण शान्त भऽ गेल। चुपा-चुप्पी भेल देखि धुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, किदैन बाजए लगलिऐ आ बिच्चेमे चुप किए भऽ गेलिऐ?”

गोपालबाबू बजला- “चुप्प नइ बुझह। जे कहए चाहै छिअ तेकर मुँह-नाडैरकेँ मने-मन मिलानी कऽ रहल छी। तूँ सभ किछु भेलह तँ दुनू गोरे बाले-बोध ने भेलह।”

मुनीलालक कमो-सम्म, मुदा धुनीलालक मन सोल्होअना

परसाएल केरा जकाँ पघील गेल। मुड़ी डोलबैत धुनीलाल बाजल-

“तइमे कोनो चोरा-छिपी थोड़े नुकाएल अछि।”

गोपालबाबू बजला- “बौआ, जहिना विद्यालयमे तहिना गामो-समाजमे अधिकांश लोक कहिते छैथ जे सभ झंझटक जड़ि गोपाले बाबू छिआ। मुदा तेकर परवाह कहाँ अछि, हमरो कर्मक संग विचारक प्रवाह अछि किने। तोहूँ सभ बुझि लएह जे जहिना पिताजी अप्पन कमाइपर अप्पन जीवन ठाढ़ केने रहला, तहिना अपनो छी। मात्र आठ घन्टा ड्यूटीक आमदनी (दरमाहा) अछि, तैपर अप्पन जीवन ठाढ़ केने छी, तँए केकरो परवाह नइ अछि। आन जकाँ जे स्कूलमे दरमहो लइ छी आ घरपर पढ़ा बाइलियो कमाइ करै छी, आन बाजैथ कि करैथ आकि नइ करैथ, मुदा किनको कहने अप्पन रास्ता नइ ने तोड़ि देब। तँए, जहिना विद्यालयक सभकियो झंझटिया बुझै छैथ, तहिना अपनो देखिते छी जे जेकर चालि-चलैन चौपट्ट अछि ओकरे सभकेँ हाथमे धर्मक पताका फहराइए।”

एकाएक गोपालबाबूक मनक भरास निकैल गेलैन जइसँ मन हल्लुक भेलैन। खिलैत फूलक कली जकाँ गोपालबाबूक मन कलियेलैन। जइसँ मुँहक चुहचुही चुहचुहेलैन। चुहचुहाइत गोपालबाबूकेँ देखि धुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, समय आगू घुसकल जाइए। आ सवाल पछुआएल जाइए।”

सोल्होअना सन्तुष्ट भेल गोपालबाबू बजला-

“बौआ, तोरा सभक पैछला उधारी सठबैसँ पहिने एकटा उधारी हमहूँ मंगै छिअ।”

नगद-उधारकेँ जहिना मुनीलाल नइ बुझलक तहिना धुनीलाल सेहो नहियेँ बुझलक। तँए जिज्ञासु जकाँ दुनू संगे बाजल- “से की

गुरुदेव?”

गोपालबाबू बजला- “बौआ, ‘पेट पूजा की छी?’ ई प्रश्न तोरा दुनू गोरेले उधारी भेलह, एकर जवाब उधारी रहलह। अखन पैछला प्रश्नक जवाब दइ छिअ।”

ओना, मुनियो लाल आ धुनियो लाल अप्पन सवाल बिसैर गेल छल, मुदा बजैक क्रममे जखन गोपालबाबू बजला तइसँ दुनूकेँ मोन पड़ल।

तैबीच अप्पन बात बजैसँ पहिने गोपालबाबू दुनूपर माने मुनियो लाल आ धुनियो लालपर नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे उताहुल जकाँ तँ नहि, मुदा उत्सुक जकाँ दुनू जरूर अछि। गोपालबाबू बजला-

“बौआ, अंधविश्वास एक्के रंगक नहि, स्तरक हिसाबसँ सेहो आ समयक हिसाबसँ सेहो रंग-रंगक अछि। तँए एकरा बरखाउ बेमारी जकाँ नहि बुझि जनमाउ बेमारी जकाँ बुझबाक चाही। जहिना देवतोमे जन्मा आ अजन्मा अछि, तहिना।”

मुनीलाल बाजल- “गुरुदेव, जन्मा की भेल आ अजन्मा की भेल?”

गोपालबाबू बजला- “जन्माउक माने भेल सभदिना रोग, आ बरखाउ माने भेल मौसमी, जेकरा समैया बिमारी कहै छहक।”

चुपा-चुपी देखि गोपाले बाबू बजला-

“एक रोग रहितो ओकर इलाजक अनेको पद्धतिक चलैन अपना ऐठाम रहल अछि। एकटा श्लोक अछि-

‘वेद्या वदन्ति कफपित्तमरुद्विकारा:

ज्योतिर्विदो ग्रहगतिं परिवर्तयन्ति।

भूताभिषंग इति भूतविदो वदन्ति,

प्राचीनकर्म बदलवद् मुनयो वदन्ति’।

वैद्य कहै छैथ अहाँक रोगक कारण शरीरक कफ, पित्त आ विकृत वातक गड़बड़ी अछि। ज्योतिषी कहै छैथ ‘अहाँक ग्रहक गति विपरीत भऽ गेल अछि’, भूतवादी कहै छैथ जे ‘अहाँक ऊपर भूतक छाँह पड़ि गेल हेन’। आ मुनिजन कहै छैथ ‘अपने केलहाक फल छी’। अही बीच विश्वास आ अंधविश्वास दुनू अछि, जे झंझटक जड़ि छी।”

❑

शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

बखेरिया लोक

विद्यालयमे काल्हि छुट्टी रहत, तँए जहिना शिक्षक तहिना छात्र-छात्रा सभकेँ काजक स्वतंत्रा रहतैन, जइसँ भरि मन गप-सप्प करैक अवसर सेहो भेटिये जेतैन। कहब जे भरि मन गप-सप्प की भेल? लोकक बीच भरि मन गप-सप्प करैक माने मनक सभ बात करैत मनकेँ पूर्ण खाली कऽ लेब, यएह भेल भरि मन गप-सप्प करब।

स्कूलक सिमानसँ आगू बढ़िते मुनीलालकेँ पाछूसँ धुनीलाल कहलक-

“मुनीलाल भाय, कनी चालि छोट कऽ दियौ, हमहूँ दौड़ल अबिते छी।”

मुनीलाल मने-मन विचारलक जे कनियेँ रूकि गेलासँ धुनीलालक दौगक परेशानी तँ मेटेबे करत, तँए उचित हएत जे पाँच-दस सेकेण्ड रूकि जाइ।

मुनीलालकेँ ठाढ़ होइत देखि धुनीलाल दौड़ब छोड़ि ठाढ़ भऽ कऽ पहिने चारि-पाँच बेर नमहर साँस छोड़बो केलक आ लेबो केलक। जइसँ साँसक क्रियामे धीरता आबए लगलै। मने-मन विचारलक जे जेते कालमे मुनीलाल भाय लग पहुँचब, तेते कालमे अप्पन थकानक साँस सेहो असथिर कऽ लेब। सएह केलक।

धुनीलालकेँ लगमे अबिते मुनीलाल पुछलक- “धुनी भाय,

अहाँकेँ एते देरी किए भेल?”

अखन तक मुनीलाल सोझे धुनिये लाल कहै छल आ जहियासँ गोपालबाबूक सम्पर्कमे दुनू आएल तहियासँ जीवनक गति-विधि सुधरने विचारमे सेहो सुधार भेबे कएल अछि, तँए भाए-भैयारी शब्दक प्रयोग दुनू दुनूक संग करए लगल। अपना गाम-समाजमे एहेन बनले अछि जे जहिना अप्पन पिताक भायकेँ काका, चाचा कहै छिऐन तहिना ने गाम-समाजक आनो परिवारजनकेँ काका, चाचा कहबे करै छिऐन, यएह छी समन्वयवादक विचारधाराक सूत्र, समतामूलक समाजक नीवक एकटा ईंट। अही विचारधाराक बीच भाए-भैयारीक सम्बन्ध सेहो अछिए। धुनीलाल बाजल-

“मुनी भाय, कौल्हुका छुट्टीक सूचना सुनिते मनमे भेल जे गोपाल चाचासँ भेँट कऽ ली। तँए जखन ऑफिस–स्टाफ रूम–क मुँह लग पहुँचलौं कि देखलौं जे गोपाल चाचा ललैक-ललैक बाजि रहल छला। ओना, हुनका सभक बीचक, माने शिक्षक सभक बीचक, विवादमे बाल-बोध छात्र-छात्राकेँ नहियेँ पड़क चाहिऐ। जइसँ चोट्टे घुमि गेलौं, तँए पछुआ गेलौं।”

गप-सप्पक मुँह-मिलानी करैत दुनू गोरे आगू बढ़ल। चारि डेग आगू बढ़ला पछाइत मुनीलाल बाजल- “धुनी भाय, अखन घरपर चलू। बेरहट खाकऽ दुनू भाँइ गोपाल चाचा ऐठाम चलिकऽ बुझब जे किए स्कूलक स्टाफक बीच चाचा अहाँ ललकै छेलिऐ। ऐसँ एते तँ हेबे करत किने जे एक दिस शिक्षकसभक बीच किछु बाजबो ने भेल, जइसँ हुनका सभक मनमे चोट लगितैन आ दोसर दिस अपनत्वक जिज्ञासा सेहो तँ भेबे कएल।”

गोपालबाबू अपनो अप्पन विचारपर दृढ़ भेल ऑफिस–स्टाफ–

रूमसँ निकैल डेरा दिस बढ़ला। ओना, जरना हटने माने ईंधन हटने आगि जहिना शान्त हुअ लगैए, तहिना गोपालबाबूक विचारक आगि सेहो कमैत-कमैत शान्त भइये गेल रहैन, मुदा ओहू शान्तिमे भुमहुर आगि जकाँ एते तँ उष्मा बनल छेलैन्हे जे अप्पन विचार अपने तक नहि राखि बच्चा-सँ-सियान धरिकेँ सेहो जना देबे करबैन। तइले तँ जननहारो आ जनौनिहारक खगता अछिए। भने दूटा रमचेलबा माने मुनीलाल आ धुनीलाल भेटने एते तँ मदैत भेटबे करत। समयक (कालक) प्रभाव जहिना जीवनपर पड़ैए तहिना मनक विचारपर सेहो पड़िते अछि।

6 बजे सौंझुका समय। दिन अन्त भऽ रहल छल तहिना रातिक आगमन सेहो भऽ रहल छेलै, तैबीच सूर्य सेहो अप्पन लटकल शक्तिकेँ समवरण कऽ रहल छला। गोपालबाबू दरबज्जाक आगूमे कुरसीपर बैसल छगुन्तामे पड़ल रहैथ, जे केना एकटा साधक महात्माक विसरन-उसरन कएल जा रहल अछि.! आँखिपर ओहिना अखनो अँटकल अछि जे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अप्पन हिन्दी साहित्यक इतिहासमे रैदास महात्माक चर्च निर्गुन महात्माक रूपमे विस्तारसँ तँ नहि, मुदा अप्पन क्षमतानुसार इमानदारीसँ केनहि छैथ।

तही समय मुनीलालो आ धुनियो लाल आबिकऽ गोपालबाबूक आगूमे ठाढ़ भेल। दुनूकेँ दूटा कुरसीपर बैसबैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ, जहिना गुप्तजी, मैथिलीशरण गुप्त ‘यशोधरा’मे लिखने छैथ, ‘आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी’। तहिना आब तोरा सभक पहर एलह अछि।”

ओना, गोपालबाबूक विचार दुनू गोरेमे कियो ने सोल्होअना बुझलक, मुदा खण्ड काव्य जकाँ नइ बुझलक सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो तँ अछिए। विचारसँ दूर रहलाक पछातियो दुनू गोरे एते तँ बुझबे केलक जे ‘भरिसक कोनो काजमे हमरो सभक खगता

गुरुदेवकेँ छैन’। दुनू गोरे माने मुनियो लाल अ धुनियो लाल समवेत बाजल-

“तैयार छी।”

ओना, दुनू विचारिकऽ एक विचार नइ बनौने छल मुदा जहिना विषुवत रेखा, जे दुनियाँक मध्य रेखा छी, जीरो डिग्री अक्षांशपर अवस्थित अछि, ओतएसँ उत्तरो आ दच्छिनोमे एकरंग दूरीपर एक्के रंगक मौसमो अछि आ एक्के रंगक उपजोवारी उपैजते अछि, तहिना मुनीलाल आ धुनीलालक भाव-भूमिमे सेहो भइये गेल अछि, जइसँ समवेत आवाज भेल।

अप्पन औझुका मुहाँ-ठुठीकेँ मुनीलाल आ धुनीलालकेँ सुनबैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ, अपना धरतीपर सँ साधक सभकेँ उसरन-विसरन भऽ रहल छैन।”

नमा वर्गक मुनीलाल आ धुनीलाल, केना बुझैत जे साधक के भेला आ उसरन-विसरन की भेल? गीत-भजनक ध्रुपद जकाँ दुनू समवेत बाजल-

“गुरुदेव, जखन कबीरो बाबा कहने छैथ जे ‘शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान’। अपने जे आदेश देब, तेकरा हम अप्पन शक्ति भरि पूरबैले तैयार छी।”

मुनीलाल आ धुनीलालक विचार सुनि गोपालबाबूक विचारमे जेना हेराएल घीवक घैल भेटल होनि तहिना भेलैन। मने-मन विचारि लेलाह, जे भेल से भेल, जे एतबो नइ बुझैए जे केकरो उसरन-विसरन ताबे धरि नइ होइए, जाबे धरि दुनियाँक एक्कोटा प्राणी–संगी–संग पूरैत रहैए। विचारकेँ नीरसँ निरबैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ, काल्हि रैदास जयन्तीक अवसरपर आमंत्रित छी,

तइमे तहूँ सभ चलिहह। जेतबे-तेतबे बाजि श्रर्द्धाजलि दऽ दिहनु।"

एक तँ नव काज, तइमे नव उमेरक लोक जे कहियो देखने-सुनने नइ अछि, तैठाम सार्वजनिक मंचपर मुँह उठाएब, बाल-बोधक विचारसँ बाहर अछिए।

मुनीलाल धुनीलाल दिस देखि आँखिक इशारासँ टुसकियेलक। मुदा धुनीलालक मन अपने धुनकीपर चढ़ल रूइआ जकाँ जौड़मे ओझराएल छै तँए बकारे बन्न भऽ गेल छेलइ।

दुनूकेँ अवाक् देखि गोपालबाबू बुझि गेला जे दुनू अपनाकेँ सोल्होअना अनाड़ी बुझि रहल अछि। अनाड़ीकेँ नाड़ी बनाएब, यएह तँ भेल कलाकारी। मुस्कुराइत गोपालबाबू बजला-

"बौआ, रैदास के छला आ केहेन छला, मूल प्रश्न ई अछि। तँए धियानसँ सुनह।"

जहिना कीर्तन मण्डलीमे कीर्तनिया, नटुआ मण्डलीमे नचनिया तैयार भऽ स्टेजपर जाइले सन-सन करैत रहैए, तहिना ने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ सिखाएब अछि। वैचारिक दौरक सिखौलहा बेवहारिक दौरमे अनुचितो होइते अछि। मुदा किछु होइए, ईहो तँ सत्य अछिए जे जहिना मुनीलाल नमा वर्गक छात्र अछि तहिना ने धुनीलाल सेहो अछि, तँए बाल-बोधक रूपमे क्षमादान दइबला अछिए।

नाकारात्मक विचारकेँ सकारात्मक बाटपर आनैत गोपालबाबू बजला-

"बौआ, रैदास चमार जातिक छेला आ कासीमे अपन चमारी जीवन, माने जूत्ता सिआइक अप्पन जीविका बनौने रहैथ।"

मुनीलाल बाजल-

"गुरुदेव, मामा गाम गेल रही, रातिमे खेला-पीला पछाइत

जखन सुतैले बीछानपर गेलौं तखन मामा, शीत-बसन्तक खिस्सा कहब शुरू केलैन। आन दिन जेना ओछाइनपर सुतिते टप-दे नीन आबि जाइ छल, से मामाक खिस्साक धुनमे केतए पड़ा गेल तेकर कोनो ठेकाने ने रहल। आने-आन सुननिहार जकाँ हमहूँ हूँहकारी भरए लगलौं। आधा राति जखन बित गेल, माने बारह बजे रातिक बाद, तखन छुट्टी दैत मामे बजला जे आब सुतै जाइ जाह, जे आगू अछि से ऐगला दिन कहबह। ओ खिस्सा हमरा अखनो ओहिना मोन अछि जेना सुनलौं। तहिना रैदास दादाक विषयमे खिस्सा जकाँ कहबै तँ जिनगी भरि मोन रहत।"

मुनीलालक विचारकेँ नीक जकाँ धुनि गोपालबाबू बजला-

"बौआ सभ, अखन धरि जे भेल से भेल स्कूलक भैयारीमे, माने शिक्षकजगतमे, बखेरिया लोक कहि मुँह-मिलानी कऽ लेलैन, ई भेल एकटा सीमा।"

'बखेरिया' शब्द कानमे पड़िते मुनियो लाल आ धुनियो लालक कान चुलचुलाए लगल, किएक तँ कहियो 'बखेरिया' शब्द सुनने नइ छल, मुदा मनमे एते आशा तँ भरल छेलैहे जे गुरुदेव गोपाल चाचा छथिए। मुनीलाल बाजल-

"गुरुदेव, बखेरिया की भेल?"

ओना, गोपालबाबूक अपनो मन बजैकाल मनाही केने छेलैन जे अनभुआर शब्द बाजि रहल छी। मुदा लगले फेर अपने मन उत्साहित होइत कहि देलकैन, अनभुआर जाबे भुआर नइ बनत ताबे ओ दुनियाँकेँ देखि-बुझि केना सकत। गोपालबाबू बजला-

"बौआ, जेना कौल्हुका कार्यक्रम अछि, तेना अपना सभकेँ पहिने ओइ कार्यक्रममे जुटि जाएब अछि, मुदा ऐ मद्दे जे मुद्दा उठि गेल अछि ओकरो तँ एक नजैर देखि लेबे नीक हएत।"

धुनीलाल बाजल-

“हँ, से तँ हेबे करत।”

दुनूक सहक सहमत आकि सहमतक सह पेबिते गोपालबाबू बजला- “कर्मक दैड़मे आगू बढ़ह। बखेरिया लोकक माने भेल जे अप्पन बखरा खातिर बखेराक सीमापर ठाढ़ भऽ बखेरा करैए, वएह भेल बखेरियाक सीमा आ सीमापर ठाढ़ भेल बखेरिया लोक।”

ऐनामे जहिना अप्पन मुँह-कान लोक अपने देखैए जे संगमे रहितो हेराएल रहैए, तहिना दुनू गोरेकेँ माने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ बुझि पड़लै। धुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, कौल्हुका कार्यक्रम सिर-चढ़ अछि, तँए आँखि मुइन कऽ अखनियेसँ ओइमे लगि जाएब अछि।”

जखन कोनो हेराएल रास्ता परिचित जगहपर पहुँच जाइए, तखन जे मनमे खुशी होइए, सएह खुशी धुनीलालक विचार देखि गोपालबाबूक मनमे भेलैन। बजला-

“दुनू गोरे कान पाथि सुनह। भक्त रैदास बहुत पैघ संत छला। जातिक चमार छला। बहुत पैघ साधक छला, साधक की से अखन नहि, अखन बस एतबे जे रैदास ऊँच्च कोटिक साधक छला। बहुत पैघ आत्मज्ञानी छला। काशीमे रहै छला। अपनामे चौबीसो घन्टा लगल रहै छला। जहिना अपना सभक खेत-पथारक ओगरवाही करैबला रखबारक खोपड़ी होइए तहिना छोट-छीन घर छेलैन जइमे ओ रहै छला। पत्नी लगा मात्र दुइये गोरेक परिवार छेलैन। ओहीठाम जूत्ताक काज करै छला। तइसँ जे कमाइ होइ छेलैन तहीसँ परिवार चलै छेलैन। जखन काजसँ निवृत्त होइ छला, माने जेतेक समय जइ काजक छेलैन तेकर पछाइत, अप्पन साधानामे लगि जाइ छला।”

एक दिन एकटा साधु रैदाससँ मिलए एलैन। ता रैदासक

तत्त्वज्ञानक प्रसिद्धि पसैर गेल छेलैन। रैदासक आर्थिक स्थिति देखि ओ छगुन्तामे पड़ि सोचए लगला, एहनो गरीबीमे आत्मचिन्तक पैदा होइ छैथ.! ओ संत, माने मिलैले जे आएल रहथिन, रैदासकेँ कहलकैन, ‘हम अहाँकेँ पारस मणि दइ छी, तइसँ अहाँक जीवन सुधैर जाएत।’

रैदास कहलखिन- “भाय, हमरा कोनो वस्तुक खगता नइ अछि, सभ किछु भरल-पूरल अछि। जेकरा असंतोष छै तेकरा खगता छै पारस मणिक, जेकरा संतोष छै ओकरा लिए पारस पात्थरे छी।”

नमहर साँस छोड़ैत मुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, सभ अखियास भऽ गेल। काल्हि जे कार्यक्रम अछि, तइले आब कोनो तरहक तैयारीक जरूरत नइ अछि, जहिना छी तहिना समयसँ पहिनहि काल्हि कार्यक्रममे भाग लइले उपस्थित हएब।”

मुनीलालक बात सुनि गोपालबाबू मने-मन आंकए लगला जे ठीके कहब अछि, ‘बिनु भय होई न प्रीति’।

❑

शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

नव जीवन

महादेवपुर गामक कार्यक्रमसँ, माने महादेवपुरमे रैदासक जयन्ती भेलासँ इलाकामे अनेको रंगक नव जीवन उठिकऽ ठाढ़ भेल। गामो ठाढ़ भेल, गामक समाजो ठाढ़ भेला आ गोपालबाबूक संग मुनियो लाल आ धुनियो लालक जीवन उठिकऽ ठाढ़ भेल।

गाम ठाढ़ भेल एना जे आइ धरि गाममे कहियो महापुरुष–आत्मज्ञानी-तत्त्ववेत्ता–क जयन्ती नइ भेल छल, जे भेने गामकेँ नव जीवन भेटल, तहूमे कार्यक्रमक जे संयोजक छला, ओ मंचेपर सँ घोषणा कऽ देलैन जे जाबे तक शरीरमे शक्ति रहत, जइसँ कार्यक्रम कऽ सकब, ताबे तक समारोह करैत रहब।

देखो-देखीसँ ते लोकमे उत्साहक संचार होइते अछि। एक्के-दुइये गामक सभ, माने जेते लोक कार्यक्रममे आएल छला, सभकियो अप्पन बैसारे परसँ, माने समारोहमे जे जैठाम बैसल रहैथ तहीठामसँ, उठि-उठि ठाढ़ भऽ भऽ बजला-

“जाबे जीबैत रहब, ताबे अहिना रैदास बाबाक जन्मदिनक शुभकामना दैत रहबैन।”

समाजक लोकमे एक नव जीवनक संचार भेल।

भाषणकर्तामे मुख्य वक्ता गोपाले बाबू छला, तँए तेसर पहरमे माने कार्यक्रमक तेसर सीढ़ी (स्टेज)मे हुनका समय भेटलैन। गोपालबाबू तँ ओहन वक्ता छैथ नहि जे वक्तव्य कागजपर लिखकऽ

लऽ जेता आ मंचपर पढ़िकऽ सुना देथिन। ओ तँ ओहन वक्ता छैथ जे अप्पन रूटिंगक अनुकूल कार्यक्रम तैयार करै छैथ आ जे तैयार करै छैथ से लोकक बीचमे बजै छैथ। तँए कार्यक्रम करैसँ पहिने ने भाषण तैयार करै छैथ आ ने भाषणक पछाइत मोन राखै छैथ। आन जकाँ भाषणक पछाइत ई नइ बजै छैथ जे सभ बात तँ बजलौं मुदा असलाहा बात छुटि गेल।

कार्यक्रमक तेसर दिन, सुर्ज अस्ताचलगामी भऽ गेल छला। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर गोपालबाबू चाह पीबैक आसमे बैसल छला। पत्नी आँगनसँ हुलकी मारि देखि नेने छेलैन जे हाथ-पएर धोइ मुँह-आँखि आ नाक-कानकेँ जलसँ सिक्त कऽ आबि बैसल छैथ। पतिकेँ बैसल देखिते सुशीला चाह बनबए लगली।

सुशीला अप्पन विचारमे ई सुधार आनि नेने छैथ जे पुरुखक आगूमे बैस चाह पीब आकि कोनो चीज खाएब, जे अखन तक समाजमे वर्जित अछि, तेकर वर्जनक सीमाकेँ सुधारि एकरस बना लेने छैथ। तँए एक हाथमे गोपालबाबू ले आ एक हाथमे अपना ले चाहक गिलास नेने दरबज्जापर आबि पतिक हाथमे गिलास पकड़ाबैत अप्पन गिलास वामा हाथसँ दहिना हाथमे लैत चौकीपर बैसली।

ओना, दिनमे केते गोरेक मुहेँ सुशीला सुनि नेने छेली जे 'गोपालबाबू गामक जय-जय कऽ देलैन', तेकर उन-मुनी सुचित्रोकेँ छेलैन, तँए पतिक आगू निधोखसँ बैस, चाह पीबैक संग गपो-सप्प करैक मन बनौने छेली।

हाथ-पएर धोला पछाइत दरबज्जापर आबि गोपालबाबू चौकीपर बैसलो ने छला कि तखन मनमे परसुका वक्तव्य आबि गेल रहैन। वक्तव्यक समीक्षा करिते किछु शब्द सभपर धियान गेलैन। मने-मन अपसोच करए लगला जे जइ गाम-समाजक बीच कार्यक्रम

भेल, तइसँ प्रतिकूल किछु शब्द बजा गेल जेकर व्याख्या हमरा कऽ देबाक चाहै छल, से नहि कऽ सकलौं। शब्दक भ्रम अपना समाजमे एतेक जर्बदस्त अछि जे धर्म सन अकाट्य सत्य रहितो शब्दक जालमे तेना ओझरा गेल अछि जे ओकर वास्तविक रूप किछु ने, मात्र एक शब्द रूप बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि। धरतीपर सात अरब लोक अछि, सभकेँ अपन-अपन धर्मो अछि कर्म सेहो अछिए, जइसँ धर्मक सात अरब व्याख्या सेहो अछिए। देखिते छी जे एक्के महावीरजीकेँ चोरो चोरी करैकाल कबुला करैए जे जँ सुतरल तँ मिठाइ चढ़ेबह आ सिपाहियो तँ कबुला करिते अछि, जे हमरा क्षेत्रमे चोरी-चपाटी नइ हएत तँ मिठाइ चढ़ेबह। यएह खेल दुनियाँक लोको पसारने अछि आ प्रकृति सेहो पसारनहि अछि। एक्के वस्तु अमृतो छी आ मृतो छी।

भाषणक बीच रैदासक जीवनक सम्बन्धमे जे गोपालबाबूक मुहसँ अपरिचित शब्द निकैल गेल छेलैन, जेना- साधक, तत्त्वज्ञानी, आत्मचिन्तक, पारस मणि आदि, तेकरा ओ मने-मन अपनहि विग्रह कऽ रहल छला। किछु होउ, केतबो झगड़ा-झंझट होउ आकि सिनेह-प्रेम, पति पत्नीक बीच एहेन वैचारिक आकर्षण तँ अछिए जे दुनू-दुनूक जीवनकेँ अप्पन जीवन बुझिते छैथ।

दू घोंट चाह पीलाक बाद सुशीलाक मनमे जेना उड़ी-बीड़ी जागए लगलैन। केते गोरेक मुहेँ अप्पन पतिक जय-जयकार सुनि नेने छेली। सुशीला बजली- “महादेवपुर गाममे की सभ भेल?”

पत्नीक विचार सुनि गोपालबाबू मने-मन विचारए लगला जे बिना कोनो कारणेँ टिटही थोड़े लगैए। किछु कारण जरूर अछि। विचारकेँ उनटबैत गोपालबाबू बजला-

“अहाँकेँ के की कहलक, पहिने से बाजब तखन ने जे सभ

भेल तेकर मिलानी करब।”

सुशीलाक मनमे प्रेमक एकटा नव दृश्य आगूमे ठाढ़ भइये गेल छेलैन। ओ ई भेल छेलैन जे किछु होउ, मुदा अर्द्धांगिनी तँ हमहीं भेलिऐन किने। आइ जँ कोनो फल पतिकेँ भेटैन आकि हमरे भेटए, तँ दुनू गोरेक अधा-अधी हिस्सा भेबे कएल किने। पतिक नामे जँ जय-जयकार समाजमे होइए तँ हमरो भेल किने, यएह खुशी सुशीलाक मनमे नाचि रहल छेलैन।

चाह पीलाक बाद गोपालबाबू मने-मन अपनाकेँ देखि रहल छला। अपनाकेँ देखब, सत्यकेँ देखब छीहे। समाजो आ परिवारोक लोक दोसरकेँ बेसी देखै छैथ आ अपनाकेँ देखिये ने पेबै छैथ जे अपन की गति-विधि अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह, तइसँ गोपालबाबूकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन जे शरीर पेब, जे शरीर दुनियाँमे सभसँ मूल्यवान छी, जैपर दुनियाँक खेल चलैए, अप्पन जिनगी केहेन अछि?

एकाएक एकटा भ्रम गोपालबाबूक मनमे जगलैन। जगलैन ई जे अखन तकक अप्पन जीवन भ्रमित छल, माने ई जे जइ शिक्षकवृन्दक बीच अपनो अपनाकेँ सहयोगियो आ सहयोग पबैबला सेहो, बुझै छेलौं ओ भ्रम छल। तेकर सोझा-सोझी परिचय रैदासक जयन्ती समारोहमे भइये गेल। हम मनुक्ख छी, दुनियाँक जेते मनुक्ख अछि सभक संग बराबरीक सम्बन्ध अछि, तैबीच जँ केतौ खोंट-खाँट अछि, तइमे अपने तँ यएह ने देखब जे अप्पन की गुण आ की दोष अछि। दुनियाँ की करैए, से सात अरब लोकमे थाह पाएब? मुदा अपने अप्पन विषयमे बुझब-जानब, ई थाह तँ अछिए।

अप्पन विचार गोपालबाबूकेँ जेना समगम बना देलकैन। समगम होइत पत्नी दिस मुँह उठा बजला- “समाजक लोकक मुहेँ गारि-फज्झैत तँ नइ ने सुनलौं हेन। समाज दू-मुहाँ अछि, कखनो

नीक काज देखि हँसैए तँ कखनो अधला काज देखि सेहो हँसिते अछि। तैसंग अधला काजपर जे हँसैए ओ नीको काजपर तँ हँसिते अछि।”

शुभ कालमे जहिना परिवारमे कोनो बाल-बोध बच्चा उट-पटांग शब्दक प्रयोग कऽ दइए तखन जहिना परिवारक लोक खौंजा उठैए तहिना खौंझाइत सुशीला बजली-

“अधला हएत अनका घरमे, हमरा घरमे किए हएत।”

ओना, बजैक क्रममे सुशीला खौंझाकऽ बाजल छेली, मुदा हृदयक मन खुशीसँ लहलहाइत रहैन तँए बाजिकऽ मुस्किया देलैन।

ओना, गोपालबाबू अपनो समाजक बीच आंकि रहल छला जे रैदासक जयन्तीक प्रभाव समाजमे की पड़ल अछि। रैदास युगपुरुषे टा नहि, जीवनपुरुष सेहो छला। लाखो-करोड़ोक जीवनक बीच हुनको (रैदासक) एकटा जीवन छेलैन, जे साधारण जीवन नहि देवतुल्य साधक जीवन छेलैन। अहाँ कहब जे औझुका लोक बेसी चालवाज भेल अछि, ओइ समय माने रैदासक समयमे, माने आइसँ करीब छह साए बरख पूर्वमे, नहि छल सेहो बात नहियेँ अछि। टटघर हुअ कि भीतघर आकि कोठे किए ने हुअ, जेठक पछबा हवा आ हथिया नक्षत्रक झटका सभकेँ लगैए। भलेँ ओइमे किछु खसि-पड़ि जाए, जे पुन: झटकीक पछाइत बनौलो जा सकैए। मुदा जीवनकेँ रहैक लेल घर तँ चाही। जीवनमे जँ जाने नहि रहत, तखन तँ अजान हएब स्वभाविके अछि।

संयोग बनल, दुनू परानी गोपालबाबू गप-सप्प कइये रहल छला कि मुनीलाल आ धुनीलालकेँ रस्तापर अबैत देखलैन। गोपालबाबू फुसफुसा कऽ पत्नीकेँ कहलैन-

“दुनू बच्चाक संस्कार बहुत उग्र अछि।”

गोपालबाबू बाजिकऽ मुँह बन्न कऽ लेलैन आ पत्नीपर सँ नजैर उठा मुनीलाल-धुनीलालपर देलैन। नजैर-पर-नजैर चढ़िते जेना नजैर खुजबो करैए आ बन्नो तँ होइते अछि, तेना नइ भेलैन, मुदा नजैरिक पानिमे मधुरपन तँ आबिये गेल छेलैन।

तैबीच कनी फरिक्केसँ मुनीलाल बाजल-

“प्रणाम गुरुदेव, अपनेक चर्च तँ गाम-गाममे भऽ रहल अछि.!”

गोपालबाबूक मनमे अपनो एहेन अनुमान रहबे करैन। किए तँ नव काजक चर्च उठिते अछि। तँए गोपालबाबू विचारकेँ मोड़ैत बजला-

“परसुका कार्यक्रमक लाभ तोरा सभकेँ की भेलह?”

गोपालबाबू ई सोचि बजला जे जखन लोक अप्पन हानि-लाभ, आकि नीक-बेजाकेँ बुझए लगत तखन ने हानिकेँ माने बेजाएकेँ पकैड़ लाभ दिस, माने नीक दिस अपनाकेँ बढ़ौत। आ जखन नीक दिस अप्पने बढ़ए लगत तखन ने नीक बनैत-बनैत ओते नीक बनि जाएत जेते नीक रैदास, आत्मज्ञानी-तत्त्ववेत्ता साधक छला। गप-सप्पक क्रम अलग अछि, मुदा बेवहारिक जीवनक क्रम नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत।

अखन हानि-लाभ, माने नौमा क्लासक बाल-बोध जीवनक हानि-लाभ केना बुझि पौत, मुदा जहिना माता-पिताक आशीर्वाद पाबि मनमे हरितपन अबैए, जइसँ विचार कलशियाए लगैए, तहिना मुनीलालकेँ भेल। मुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, केते गोरे बाबूकेँ पुछलकैन जे दुखन तोरे बेटा मुनीलाल छिअ।”

दुनियोँ तँ दुनियाँ छी, जैठाम दू रंगी खेल चलिते अछि। कियो

बापक बलेँ चमक पबैए आ कियो बेटा बलेँ चमक पेबिते अछि। खाएर जे अछि, अखन जँ दुनू बच्चाकेँ, माने मुनीलाल आ धुनीलालकेँ, खाली वैचारिके टा नहि, बेवहारिक जीवनपर सेहो ठाढ़ कएल जाए, तखन जहिना-जहिना विचार पनपत-कलशत तहिना-तहिना ने क्रिया-कलाप सेहो पनपबे-कलशबे करत। गोपालबाबूक मन मानि गेलैन, बजला-

"बौआ, अपना सभक पुरुखा, माने पूर्वज, बजै छेला जे जइ पुरुषमे पुरुषत्व, पुरुखपन, पुरुखारथ, पुरुखपना नहि रहत ओकरे ने पुरुखक झड़ कि पुरुखक नाड़ेर आकि पुरुखक घेघ कहबै आकि जेकरामे पुरुखक मुहोँ रहत आ मुँहक बोलो रहत तेकरो कहबै।"

गोपालबाबूक विचारमे दृष्टि छेलैन, पहिल दृष्टि तँ ने मुनिये लाल बुझलक आ ने धुनिये लाल, मुदा दोसर विचार 'समाजक घेघ' सुनि, जहिना मुनीलालक मन चमकल तहिना धुनीलालक मन सेहो चमकल। जइसँ शरीरक भीतरी शक्तिक उष्मा दुनूमे जगलै। उष्मित होइत समवेत स्वरमे बाजल-

"गुरुदेव, मनमे विश्वासे टा नइ जगल अछि, हृदयक धड़कन सेहो कबुल रहल अछि जे गुरुदेव गोपालबाबू सिर्फ शिक्षके नहि जे पढ़ौनीए टा भरि देता, जीवनदाता सेहो छैथ।"

जहिना दुनू गोरे समवेत स्वरमे बाजल तहिना समवेते चुप होइत घुन-घुनाए लगल- 'जीवन को मैंने सौंप दिया, गुरुदेव तुम्हारे हाथों में...।'

शान्तचित्तसँ गोपालबाबू बजला-

"बौआ सभ, नीक जकाँ सुनि लएह, दुनियाँ जहिना प्रीतक सुकृत्य छी, तहिना बेपीड़ितक कुकृत्य सेहो छी। आँखिसँ जेते देखै छहक तेतबे टा दुनियाँ नइ ने अछि। सेहो जँ एकटा रहैत तखन ने, से

तँ असंख्य अछि।”

बीचमे मुनीलाल बाजल-

“गुरुदेव, हम तँ एक्केटा दुनियाँ बुझै छी।”

बाल-बोध बुझि गोपालबाबू बजला- “जेना-जेना बढ़ैत जेबह, तेना-तेना दुनियोँ बढ़ैत जेतह। तँए, धड़फड़ेने से नइ ने हेतह।”

परसुका कार्यक्रमसँ गोपालबाबूक मनमे खुशी उपकले रहैन, मने टामे नहि, जीवनो खुशहालीक दिशामे डेग बढ़ेबे केलकैन।

बिच्चेमे गोपालबाबू चुप भऽ गेला। चुप होइक कारण भेलैन जे एकटा गम्भीर सूत्र मनमे जगलैन, सुत्र ई जगलैन जे किए ने दुनूकेँ बुझा दिऐ जे दोहरी जिनगी सेहो धरतीपर अछि, तँए ऐ दोहरीकेँ बुझि अप्पन एकहरी जीवनक बाट पकैड़ चली। मुदा अपने विचार रोकलकैन। जहिना महाभारतक लड़ाइमे अर्जुनकेँ अभिमन्युक माथा टोबि परख भेलैन, तहिना मुनीलाल आ धुनीलालक माथा टोबि गोपालबाबू विचारलैन जे अखन समुचित नहि, तँए विचारकेँ रोकि गोपालबाबू बजला-

“बौआ सभ, ऐगला दिनक गप-सप्प ले मन रखिहह जे जीवन केना बदलैए?”

❑

शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

प्रीति

जहियासँ गोपालबाबूकेँ संगी सभक बीच मतभेद भेलैन तहियासँ पूर्वक सभ तरहक प्रीतिमे धक्का सेहो लगलैन। अखन तक जे एकरूपताक भावना संगी सभक बीच छेलैन, तइमे अविश्वास जगलैन। ओना, अविश्वास जगलैन जरूर मुदा सोल्होअना नहि, सोल्होअना अविश्वास जगलापर सम्बन्ध प्रभावित होइते अछि, से नहि भेलैन। भेलैन एतबे जे मनुक्खकेँ अप्पन जीवनक रस्ता पकड़ैमे अनेको व्यवधान परिवार-समाजसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँ तकमे होइते अछि। हेबो केना ने करत? जैठाम भूतकालक विचार-बेवहारकेँ वर्तमान परिवेशमे उपयोगी बना भविष्यक अनुकूल बनबैक प्रश्न अछि, तैठाम बाल-बोधक खेल नइ ने छी जे..।

स्कूलमे छुट्टी भेला पछाइत, दस डेग आगू बढ़ि गोपालबाबू पाछू उनैट-उनैट ताकए लगला जे जँ मुनीलाल आ धुनीलाल भेटत तँ गप-सप्प करैत संगे डेरापर जाएब। जँ दुनू गोरे संगे नहियोँ भेटत आ एक्को गोरे भेटत, सेहो बढ़ियाँ।

संयोग, मुनीलाल आ धुनीलालक मनमे सेहो जागि चुकल छेलै जे गोपालो बाबू तँ डेरेपर जेता, जँ अखन भेँट भऽ जाइथ तँ गप-सप्प करैत संगे-संग जाएब। खोजनिहारो तँ खोजनिहारे होइ छैथ जे समुद्र सन गहींरमे जमल पानिक बीच मोती, पहाड़क पाथरमे जमल पारस सन पाथरकेँ सेहो खोजिकऽ निकालबे करै छैथ। जेहेन जेकर भावना तेहेन तेकरा भेटितो अछिए।

मुनीलाल आ गोपालबाबूक नजैर-मे-नजैर मिललैन। एक-दोसराक बीच गोपालबाबू आगाँ रहैथ आ मुनीलाल पाछाँ छल। अप्पन डेगकेँ दाबैत गोपालबाबू रसे-रसे आगू बढ़ि रहल छला। पाछू जे अछि तेकरो ने डेग नमहर करैक जरूरत अछि। एहेन नइ ने जे दुनू अपना-अपना डेगे चलैत रहए। से जँ चलैत रहत, तखन एकठाम केना हएत आ एकरंग विचारक डेग केना बनत?

जखन मुनीलाल आ धुनीलाल गोपालबाबू लग पहुँचल तइसँ पहिनहि गोपालबाबू कनडेरिये आँखिये देखि नेने छला। आगूएसँ बजला- “बौआ सभ, की हाल-चाल छह?”

ओना, बजैक क्रममे गोपालबाबू मनक असल भावकेँ मनेमे दाबि नेने छला। ओ दाबल छेलैन जे जहियासँ शिक्षकसभक बीच वैचारिक भावनाक सूत्रपात भेल, तहियासँ गोपालबाबू अपना जीवनमे मोड़ सेहो आनि लेलैन। ओ आनि लेलैन ई जे साढ़े दस बजेसँ पाँच मिनट पहिनहि विद्यालय पहुँचब अछि। तइ बीचमे अपने फ्रेश भऽ जाएब, माने पर-पेशाबसँ लऽ कऽ मुँह-कानकेँ पानिसँ सिक्त करब धरि, घन्टी बाजत बच्चा सभक बीच वर्गमे पहुँच अप्पन कर्तव्यक निर्वहन करब। साढ़े चारि बजे छुट्टी हएत, अपन डेरापर आएब। रहल स्कूलक समयक निर्धारण, ओइले नियम-कायदा सेहो अछिए।

मुनीलाल बाजल- “अपनेक भाषण तँ..!”

मुनीलालक विचार गोपालबाबूकेँ एतेक उत्सुक बना देलकैन जे अनेरे मुहसँ खसलैन-

“धुर्र बुड़िवान! चोर छी जे चोराकऽ बाजब।”

मुनीलाल धुनीलालक प्रति गोपालबाबू एते नम्र भइये रहल छैथ जे अपने सन्तान जकाँ बेवहार करए लागल छैथ। भाय, जखन

कोनो अप्पन दुखनामा लऽ कऽ आवाज उठबै छी, तखन पाछू उनैट ताकबो तँ उचित नहियेँ अछि। गोपालबाबूक लगमे पहुँच मुनीलाल बाजल-

"गुरुदेव, विमलबाबू अपसोच करै छला। ओना, ओ अहूँकेँ कहबे करता, मुदा आन-आनक चढ़ल नजैर दुआरे कन्नी काटि रहल छैथ।"

अपन संगतुरिया बुझि गोपालबाबू अप्पन पेटक विचारकेँ पेटेमे रोकि बजला-

"विमलबाबू कोनो कि बाँटल लोक छैथ जे मुँह खोलि बजैमे लाज हेतैन।"

अप्पन जिज्ञासासँ आकि समयक गति-विधिक कारणेँ, माने साढ़े चारि बजे छुट्टीक समय, आगू-पाछू सभ निकैलते छैथ। गोपालबाबू मुनीलाल आ धुनीलाल संगे सभकियो गप-सप्प करैत बढ़ए लगला, तँए डेग छोट भइये गेल छेलैन, जइसँ पैछला तेज चलनिहारसँ अगुआएल रहितो पछुआ जाइते अछि। तँए गोपालबाबू आ मुनीलाल-धुनीलाल अगुआएल रहितो माने स्कूलसँ निकलला पछाइत, पछुआ गेला। जइसँ विमलबाबू लगमे पहुँच बजला-

"की बौआ मुनीलाल?"

तैबीच विमलबाबू आ गोपालबाबूक आँखि आँखिपर चढ़लैन। अपसोचक अकासमे विमलबाबूकेँ हेराएल देखि गोपालबाबू बजला-

"विमलबाबू, हारि-जीतक जीवनमे ने कियो हारैए आ ने कियो जीतैए, अप्पन जिनगीक भाँज कियो पुरबैए, तइमे सफल-असफल, तीत-मीठ आकि नीक-बेजाए जँ नइ हुअए तखन अहीं कहू जे की हुअए?"

जहिना डाँरक हूक रोग छोड़बैकाल, डाँरपर राखल कड़चीक

दू फाँक बत्ती लबि-लबि कऽ सटि हूककेँ भगबैए तहिना गोपालबाबूक विचार विमलबाबूकेँ उसकौलकैन। मुदा वैचारिक दौरमे विमलबाबू बेवहारक रूपमे ससैर कऽ ओतेक पाछू चलि गेल छैथ जइसँ छाती थरथरेबे करतैन। ओना, मनुक्ख चेतनशील प्राणी छी, जँ चेतनशील बनि दृढ़ संकल्पकेँ दृढ़ चेतनसँ बान्हि अपनाकेँ नव जीवनमे उतारए चाहता तँ उतारिये सकै छैथ।

ओना, विमलबाबू विज्ञानक शिक्षक छैथ आ गोपालबाबू साहित्यक, तँए विद्यालयक शिक्षक समाजक बीच दूरी छैन्हे। ओना, दूरीक दोसरो कारण अछि, ओ अछि जाति-सम्प्रदायमे बँटल समाज। जाति-सम्प्रदाय सेहो एक दोसरसँ दूरी बनौनहि अछि। ओना, गप-सप्पक क्रममे लोक दूरी शब्दक प्रयोग धड़ल्लेसँ कइये रहल छैथ मुदा बेवहारिक पक्षमे जे दूरी अछि तेकरा दाबिकऽ, माने छिपाकऽ एक-दोसरसँ मुँह उठैबते छैथ। जहिना मोबाइलमे भिन्न-भिन्न स्टेशनसँ भिन्न-भिन्न भाषामे अप्पन कार्यक्रम प्रसारित होइए, तइसँ कम कि लोकक भाषा थोड़े अछि। जेतेक रंगक लोक लग विचार-विनिमय करब तेतेक रंगक भाषा आ तेतेक रंगक विचार अछि। एकरा दोसर रूपमे एना कहि सकै छी जे धर्मक आ कर्मक जे मूर्त्त रूप हेबा चाही से शब्दक स्वरमे अमूर्त्त बनि गेल अछि। जइसँ मनुक्खक जीवन रोगग्रस्त भइये गेल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह। अनेरे गोपाले बाबू आकि विमले बाबूकेँ ऐ सभसँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन एतबे जे समाजक एकटा अंग अपनौं छी, तँए अपनो किछु करैक अधिकार अछिए। अप्पन जीवन अपना ढंगक बना मस्तीसँ जीब लेब, सएह ने सभक हृदयोमे छैन आ सभकियो अपन-अपन नियत सेहो बनौनहि छैथ। ऐठाम ई नइ बुझब जे अदौसँ अपना समाजमे नियतिवादी जीवित दर्शन बनि समाजमे चलैत आबि रहल अछि।

गप-सप्प करैत गोपालबाबूक संग विमलो बाबू आ मुनियो लाल-धुनीलाल गोपालबाबूक डेरापर पहुँचला। परिवारक बच्चा जकाँ मुनियो लाल आ धुनियो लाल ओसारपर सँ कुरसी उतारि दूरापर लगौलक। गोपालो बाबू आ विमलो बाबू अगल-बगलमे एक सीध भऽ कऽ बैस कान-मे-कान सटा गप-सप्प करए लगला। तैबीच मुनीलाल आ धुनीलाल चाह-जलखैक ओरियान केलक। मुनीलाल तस्तरीमे सजौल जलखै नेने पहुँच गेल। ओना, चारू गोरेक हिसाबसँ चारिटा प्लेटमे जलखै परोसल छल। तैबीच, गिलास आ मगमे पानि नेने धुनीलाल सेहो पहुँचल। गोपालबाबू बजला- "बौआ, चारू प्लेट चारि जगह लगा लएह, गिलास-मग बीचमे रखि दहक आ चारू गिलास पानि चारू गोरेक प्लेट लग लगा दहक।"

अखन अहाँ प्लास्टिक गिलास नइ बुझब जे खेबेकाल उनैट कऽ देहपर कूदि जाएत। देहेटा पर पानि कूदिकऽ नहि हेराएत, कुरसी-टेबुल लागल आसनक टेबुलपर सँ खसि छातीसँ निच्चाँ पएर तक सेहो भीजा देत। भाय, जखन खाइले बइसै छी तखन असथिर मनसँ खाउ। खाइयेकाल बैंकक हिसाब जोड़ए लागब तखन खाएब आकि मन वौआएब। जीवनमे जँ एकाग्रता नहि तँ ओ जीवन केहेन जीवन हएत।

चारू गोरे जलखै करए लगला। तैबीच गोपालबाबू बजला-

"विमलबाबू, जिनगीमे लोक की लऽ कऽ आएल अछि आ की लऽ कऽ जाएत।"

गोपालबाबूक विचारकेँ विमलबाबू कबीर दासक रूइआ जकाँ धुनए लगला। धुनए ई लगला जे गोपालबाबू व्यंग्य बाण छोड़लैन अछि आकि कर्म बाण? मुदा प्रश्नकेँ अथाह बुझि आकि प्रश्नक जवाबकेँ अथाह बुझि विमलबाबू पाछू घुसैक बजला- "भाय साहैब, दुनियाँमे किछु ने अछि, अछि बस एतबे जे प्रेमसँ जीवन जीब ली।"

तैबीच जलखै समाप्त भऽ गेल आ आधा-आधा गिलास चाहो चारू गोरे पीब लेलैन। जइसँ सबहक मन फुहराम बनियेँ गेल छेलैन। आत्मामे रमैत राम जकाँ गोपालबाबू बजला- “विमलबाबू, ने प्रेम बनब पहाड़ अछि आ प्रेम निमाहब पहाड़ अछि।”

विचारक प्रवाहमे आकि भावनाक प्रवाहमे विमलबाबू दहलाइत बजला- “असानो तँ नहियेँ अछि।”

मुस्कुराइत गोपालबाबू बजला-

“बिआहक धुरझाड़ लगन चलि रहल छेलइ। एकटा जीवन्त कथा कहै छी। बजारसँ अबैत रही। बीचमे ताड़ीक दोकान छल। दोकानपर बेटा बिआह करबैबला सभ सेहो छला आ पान-सातटा माछ मखानक कारोबारी लोकसभ सेहो रहैथ। बेटाक बिआह करैबला मोट रकम पेने, तँए हुनकर मन फुलाएल रहबे करैन तँए ताड़ी पीआक सभकेँ अपना दिससँ पुछि-पुछि ताड़ी पीअबैत रहथिन। आधा घन्टा बीतैत-बीतैत सभक बीच, माने बरियाती आ माछ-मखानक कारोबारी सभक बीच, एतेक घनिष्ठ सम्बन्ध बनि गेल जे लगले एकटा गाड़ी भाड़ा भेल आ आठो-दसो गोरे बरियाती भऽ गेला। एक तँ पाइयक झोंक, दोसर ताड़ीक ताव, पचास हजारसँ ऊपर रुपैआ माछ-मखानक कारोबारी सभ अपना दिससँ बिआहमे खर्च कऽ देलक। आब अहीं कहू जे ओ लाख रुपैआक प्रेम भेल कि नहि।”

एक तँ विमलबाबूक अप्पन घएल विचार चोट खेने चोटाएल छेलैन, तैपर जीवन्त घटना सुनि आरो चोटा गेलैन, असोथकित होइत बजला- “हँ, से तँ प्रेम भेबे कएल।”

जहिना मरसिया गौनिहार, भजनिया-कीर्त्तनिया जकाँ नहि जे एकटा भजन वा कीर्तन समाप्त भेला पछाइत स्वर-तानक धुन

मिलबै छैथ, तेना नहि, मरसिया गौनिहार जकाँ एकटा मरसिया समाप्त भेला पछाइत जोड़पर गबिते छैथ जे 'एक मरसिया खतम हुआ है दोसर शुरू होता है', तहिना गोपालबाबू प्रेम बनैक विचारकेँ आगू जोड़ैत बजला- "विमल भाय, प्रेम बनबसँ कठिन अछि बनल प्रेमकेँ निमाहब।"

जहिना सेब-अंगूरक बगानमे मिथिलांचलक आम-कटहरक बगवार वौआ जाइ छैथ, तहिना विमलबाबू सेहो वौआए लगला। विमलबाबूक सकुचाएल मुँह देखि गोपालबाबू मुनीलालकेँ अगुअबैत बजला- "मुनीलाल, जहिना प्रेम हएब, केकरोसँ दोस्ती हएब, आसान अछि तहिना ओकरा निमाहब कठिन अछि।"

गोपालबाबूक विचार ने मुनिये लाल आ ने धुनिये लाल नीक जकाँ बुझलक आ ने विमले बाबू स्पष्ट रूपेँ बुझलैन। मुदा अप्पन कानकेँ हरिणक कान जकाँ सुनैले ठाढ़ जरूर केलैन आ मुहकेँ बन्ने रखलैन। गप-सप्पक क्रममे मुनीलाल गोपालबाबूक सोझामे खुजिये गेल अछि तँए निधोख भऽ कऽ बाजल- "गुरुदेव, नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।"

मुनीलालक विचार सुनि गोपालबाबू हँसि देलैन। हँसैक कारण मुनीलालक इमानदार विचार छल। अप्पन कमजोरी अपना मुहेँ लोक नइ बाजए चाहैए। भलेँ बीचमे हजारो झूठक आश्रय आकि हजारो लोककेँ दोखी किए ने बनबए पड़ए। झूठकेँ सत्य बनबैक प्रयास करिते अछि।

गोपालबाबू अप्पन विचारकेँ समगम बनबैत, समगम ई जे एक दिस हाइस्कूलक विज्ञानक शिक्षक छैथ आ दोसर दिस नौमा क्लासक मुनीलाल-धुनीलाल अछि, तैठाम जँ कोनो विषयक व्याख्या हएत तँ ओ दुनूकेँ नजैरमे राखिकऽ ने हएत जइसँ दुनू समरूपेँ विषयकेँ बुझि सकए। बजला- "विमलबाबू जखन केकरोसँ

प्रेम हुअए तँ चाँकि बनाकऽ राखी जे जेकरासँ जेते प्रेम भेल, तइमे कमी नइ आबए। जँ बढ़ौतरी भेल तँ ओ दिशोन्मुख भेबे कएल, मुदा जँ से नहियोँ हुअए तैयो एतेक चाँकि रखबाके चाही जे ओइमे कमी नइ हुअए।”

मुनीलाल आ धुनीलाल मने-मन विचारलक जे, जे विचार नीक जकाँ नइ बुझब ओ दोसर दिन दोहराकऽ पुछि लेबैन, तँए मुँह बन्ने रखलक। विमलबाबू बजला- “एकटा मजगूत विचार जरूर भेटल।”

विहुसैत गोपालबाबू बजला- “प्रेम जखन बनत आ ओइमे कमी नइ औत तखन निमाहैक बाट सेहो हएत किने?”

विमलबाबू बजला- “ई तँ विज्ञानक सूत्र जकाँ सूत्रवत हेबेक चाही।”

जहिना विमलबाबू बजला तहिना गोपालबाबू विचारकेँ लपैक आगू बजला- “प्रेम बनला पछाइत ने विचारमे रूक्षता आबए दी आ ने क्रूरता, तहिना प्रेमकेँ बसिआ सेहो नइ हुअ दी। माने सम्बन्धमे गतिशीलता राखी। सम्बन्धमे जखन गतिशीलता आनब तखन भय–डर–केँ सेहो मनसँ हटा लिअ पड़त।”

नमहर साँस छोड़ैत विमलबाबू बजला- “आगूक विचार आगू दिन। आब जाइ छी।”

❑

शब्द संख्या: 1610, तिथि: 22 अक्टूबर 2023

पुरुषार्थ

विद्यालय खूजल रहलाक बावजूदो जहिना शिक्षकसभक उपस्थिति आइ कम रहल तहिना छात्रोक उपस्थिति कम रहल। ओना, गोपालो बाबूकेँ आ विमलो बाबूकेँ बुझल छैन्हे जे आइ सालक अन्तिम लगन छी, माने विवाहक दिन, तँए जहिना शिक्षक सभ शादी-विवाहमे फँसल छैथ तहिना छात्रो सभ ओझराएल अछिए। गोपालो बाबू आ विमलो बाबू, एकठामक कोन बात जे चरि-चरि-पँच-पँच ठामसँ निमंत्रित छैथ, मुदा से छैथ रौतुका। तँए जहिना शिक्षकसभ तहिना छात्रसभ सेहो अपन-अपन परिवारक संग-संग अपन-अपन सर-सम्बन्धी ऐठामक काजमे बाझि गेने विद्यालयसँ अनुपस्थित रहला।

अन्तिम लगन रहने गाम-गाममे एहेन वातावरण बनियेँ गेल अछि जे लूल्हो-नेङरा उठि जाएत। माने ओकरो सभक बिआह भइये जाएत। एक दिन पहिनहिसँ, माने कुमरमे दिनसँ फटाकाक फुटबसँ अनघोल भइये गेल छल, तैसंग डीजे आ गाड़ी-सवारीक चलबक आवाजसँ गाम-गामक वातावरणे बदैल गेल अछि।

विद्यालय खूजल रहने गोपालो बाबू आ विमलो बाबू अप्पन निर्धारित समयसँ किछु पहिनहि, माने साढ़े दस बजेसँ पूर्व, विद्यालयमे चलि एला। ओना, विद्यालयमे विद्यार्थीक संख्या आधोसँ कम्मे छल, मुदा से छल सभ क्लासक विद्यार्थी। विद्यालयमे नअटा शिक्षक आ साढ़े तीन साए विद्यार्थी रहितो साए-सबा-साए विद्यार्थी

आ दुइयेटा शिक्षक पहुँचल छला। दुनू गोरे स्टाफ रूममे बैसल विचारए लगला जे दू गोरेसँ शिक्षणक काज केना चलत? गोपालबाबू विमलबाबूकेँ पुछलैन-

"विमलबाबू, की करब? कमसँ कम चारियो-पाँच गोरे रहितौं तखन ने अधो-छिधा पढ़ौनी सम्हारि सकितौं। दू गोटे की कऽ सकै छी?"

जहिना गाम-घरमे कहबी अछि- 'प्रेत चाहे अशौच', तहिना विमलबाबू बजला-

"छात्र सभकेँ छुट्टीए देब नीक हएत।"

गोपालो बाबूक मन मानि गेलैन जे जखन पढ़ाइक काज नइ सम्हारि पाएब तखन दोसर उपाइये की अछि। गोपालो बाबू स्वीकृति दऽ देलैन। विमलबाबू छात्र सभकेँ छुट्टी दऽ देलैन। छात्र सभ घरमुहाँ भेल। दुइये गोरे स्टाफ रूपमे छला। ओना, विमलबाबू मने-मन अप्पन समयक गर लगबै छला जे भने छुट्टी भऽ गेल, बाजारक काज सम्हारि लेब। किए तँ रवि दिन-के जहिना विद्यालयमे छुट्टी रहैए तहिना बाजारो बन्न रहैए। जइसँ छुट्टी दिन बाजारोक काज नहियेँ होइए, भने आइ गरपर चढ़ि गेल। एकसंग दुनू काज चलि जाएत, माने ई जे विद्यालयमे उपस्थितियो दर्ज भऽ गेल आ बाजारोक काज भऽ जाएत।

छात्र सभकेँ छुट्टी देला पछाइत विमलबाबू गोपालबाबूकेँ कहलैन-

"मास्सैब, दुइये गोरे जे भूत जकाँ बैसल गप-सप्प करैत रहब, तइसँ नीक अपनो दुनू गोरे चलू।"

विमलबाबूक विचार सुनि गोपालबाबू मुस्की मारि हँसए लगला मुदा कोनो शब्द मुहसँ नहि निकाललैन। गोपालबाबूक हँसी

देखि विमलबाबूक मन अगम पानिमे डुमए लगलैन। जइसँ कोनो फरीच विचार मनमे उठिये ने रहल छेलैन। तरे-तर अपने मन मनकेँ धिरकारबो करैन जे गोपालबाबू सन गम्भीर विचारक लोक हँसि रहल छैथ.! बिना कारणेँ टिटही थोड़े लगैए..! केतबो परियास विमलबाबू मने-मन केलैन मुदा गोपालबाबूक हँसी भाँजपर नहियेँ चढ़लैन। चढ़बो केना करितैन, नीतिशास्त्र आ समाजशास्त्रसँ भेँट भेल रहितैन तखन ने, से तँ अखन तकक जीवनमे अवसरे ने भेटलैन। अवसर भेटलैन खाली भौतिक शास्त्र आ रसायन शास्त्र पढ़ैक। तहूमे अप्पन समाज तँ तेहेन नङर-मुरिया बनि गेल अछि जे जखन बाल-बोध, माने बच्चासँ विद्यार्थी जीवन धरि, आर्थिक उपार्जन नइ करैए, तखन माता-पिताक हड्डी दूहि जेतबो पढ़ै-लिखैपर खर्च करैए तेतबो जवान भेला पछाइत माने आर्थिक उपार्जन केलाक बाद, अपनो थोड़ै करैए। कहब जे पढ़ै-लिखैक समये ने भेटै छैन तखन अनेरे किए.? बड़बढ़ियाँ, अहाँक विचार नहियोँ मानब आकि मानियो लेब, तइसँ जिनका कहै छिऐन ओ थोड़े मानता, ओ तँ अपना मतिये चलबे करता। बड़बढ़ियाँ, चलौथु, मुदा माथमे जे कुत्ताक बीख चढ़ल छैन से कियो आन उतारतैन। नीतिशास्त्र आ साधना-क्रियासँ भेँट रहितैन तखन ने अप्पन बेकतीगत सम्पैत आ बेकतीगत कर्मसँ भेँट होइतैन, मुदा ओ कियो आन देखौतैन आकि अपना ले अपने ताकिकऽ अनता आ देखता।

गोपालबाबू बजला- "विमलबाबू, दुनियाँमे ने कियो केकरो मालिक छी आ ने गुलाम, सभ अप्पन अपने मालिको छी आ अपने गुलामो छीहे।"

विमलबाबूकेँ जेना नव विचारसँ भेँट भेलैन तहिना चौंकला। विज्ञानक शिक्षक रहने एते तँ मन मानिये गेल छेलैन जे ऐठाम, माने अपना समाजमे जे अंधविश्वास आ रूढ़िवादिता अछि ओकरा

विज्ञाने समूल मेटा सकैए। देखिते छी जे साँपक बीख हौ आकि कुत्ताक, पहिने जे मंत्रसँ झाड़ल जाइ छल ओकर आब चिकित्सा भऽ रहल अछि। मुदा अखन तक विमलबाबूक मनमे ई आएले ने छेलैन जे जैठाम लोहोक इंजन सिनूर-पीठार, फूल-पातसँ पूजल जाइए तैठाम लोक यएह ने बुझत जे आब बलुआहा महादेव नहि लोहरौआ महादेव पूजि रहल छी।

अचताइत-पचताइत माने सोचैत-विचारैत विमलबाबूकेँ जीवनक सिमानक एकटा रेह भेटलैन। रेह ई भेटलैन जे पाँच दिन पूर्व तक अपन जे सम्बन्ध गोपालबाबूक संग छल तइमे किछु-ने-किछु संचरण एबे कएल अछि। जइसँ एते लाभ तँ अपने ने भेल जे गोपालबाबूक सोझामे अप्पन कमजोरी माने अप्पन सीमाकेँ व्यक्त केने, आइ ओहन सिनेह बनियेँ गेल अछि जइसँ अपनो मन मानि लेलक जे जेहेन पुरुषार्थ गोपालबाबूमे छैन ओ विद्यालयमे किनको नइ छैन। माने ई जे विद्यालयमे जेतेक शिक्षक छैथ तैबीच हिनका जकाँ पुरुषार्थ किनकौमे नहि छैन। रहबो केना करतैन, हाइस्कूलक शिक्षक एक स्तरक छैथ, एक विद्यालयमे काज सेहो करै छैथ, तेतबे किए, एक्के कोठरीमे सभ बैसबो करै छैथ, मुदा मनमे एहेन विचार कहियो उठै छैन जे एक स्तरक विद्यालयमे जे पढ़ाइ होइए, ओकर स्तर की अछि? चाहे ओ साहित्य हुअए आकि वाणिज्य, की साहित्यक स्तर आ वाणिज्यक स्तर एकरंग अछि आकि दू रंग? सामाजिक स्तरसँ फिजिक्स हुअए आकि कैमेस्ट्री, एक स्तरक एक विद्यालयमे एक स्तरक हएबे ने उचित हएत.?

गोपालबाबू आ विमलबाबू, द्वापर युगक महाभारतक रणभूमिमे जहिना एकदिस कौरब-सेना आ दोसर दिस पाण्डव-सेना आँखि-पर-आँखि चढ़ौने रहै छल, तहिना विचारक दौरमे एक-दोसराक बीच एक-दोसराक आँखि चढ़ल छेलैन्हे। अपनाकेँ छोट

भाइक रूपमे स्थापित करैत विमलबाबू बजला- “भाय साहैब, अपनेक हँसीक..?”

विमलबाबू आधे बाजल छला कि तइ बिच्चेमे गोपालबाबू कहलकैन- “जिज्ञासा नीके अछि, मुदा नीकोक सीमा अछि किने। एक स्तरक जीवनमे एक स्तरक सभ किछु हेबा चाही।”

अपना हिसाबे, माने विचारक हिसाबे, गोपालबाबू बजला आ अपना हिसाबे विमलबाबू बुझलैन। मुदा भ्रम ई भेलैन जे विचारक सेहो अप्पन स्तर अछि, जे अप्पन सीमा उल्लंघन करत ओ अनफिट भऽ जाएत। विमलबाबू बजला- “भाय साहैब, अप्पन मुसुकदार हँसीक की कारण?”

सुयोग्य प्रश्नकर्ताक प्रश्नक उत्तर देनिहारो अपनाकेँ सुयोग्य बनाइये लइ छैथ। गोपालबाबू बजला-

“विमलबाबू, काजक हिसाबसँ दुनू गोरे अक्षम छी मुदा एते तँ सत्य अछिए जे पढ़ाइ भलेँ नइ चलि रहल अछि, मुदा विद्यालयमे उपस्थिति तँ मानले जाएत किने।”

विचारक प्रवाहमे विमलबाबू बजला- “हँ, से तँ मानले जाएत।”

अप्पन अधिकारक संग अप्पन कर्तव्य सेहो ने देखब, जखन अप्पन कियो मालिक नहि, तखन अप्पन कियो..? विमलबाबू बजला- “हँ, से तँ अछिए।”

तैपर गोपालबाबू बजला- “साढ़े दस बजेसँ साढ़े चारि बजे धरिक ने अपना सभ श्रमिक लइ छी। तैठाम जँ समयमे कलछप्पन करब, एहेन शोभा शिक्षकमे हेबा चाही।”

विमलबाबूकेँ जेना जीवनक एकटा भ्रम टुटलैन। तहिना अप्पन विचारक स्तर सेहो ऊपर उठलैन। जइसँ निष्पक्षताक

विचारक अंकुर सेहो मनमे जनमिये रहल छेलैन। विमलबाबू बजला-

"नइ, से नइ हेबा चाही।"

संयोग बनल। छुट्टी भेला पछाइत मुनियो लाल आ धुनियो लाल पहुँच गेल। जहिना अर्जुनक रथक घोड़ाकेँ मुखारी लागल छोर पकैड़ कृष्ण पाछू दिस रेड़ैत रहैथ तहिना गोपालबाबू अपन मनक विचारकेँ शिष्टाचारक छोर पकैड़ पाछू दिस रेड़लैन। पाछू दिस रेड़ाइते मनमे चैन एलैन। बजला-

"भने दुनू बच्चो आबिये गेल। आब तँ चारि गोरे भेलौं, चारि दिसक चारिटा विचार एने एकटा सामाजिक विचार तँ बनियेँ जाइए।"

मुनियो लाल आ धुनियो लालक विचारमे सुधार भइये गेल अछि जे जखने अपनासँ शिष्ट लग पहुँचैए कि सभसँ पहिने बैसैक बेवस्थापर नजैर दइए। आन विचार मनमे जे उठल होइ मुदा एकटा विचार तँ उठिये गेल छेलै जे पहिने केहेन बैसार छल आ अखन केहेन अछि।

अप्पन विचारकेँ चौरस बनबैत गोपालबाबू बजला- "बौआ सभ, कान खोलिकऽ सुनि लएह जे अपनासभ सभकियो एक भेलिऐ। जखन एक भेलिऐ तखन एक विचारक काजो ने हेबा चाही।"

धुनीलाल बाजल- "हँ, से तँ हेबेक चाही।"

गोपालबाबू बजला- "एक विचारक केहेन काज हेबा चाही?"

जहिना मुनीलाल आ धुनीलालक मन ओझरा कऽ घरमुहाँ भेल छल तहिना विमलबाबूकेँ सेहो हुअ लगलैन। मुदा ओ एते होशियारी जरूर केलैन जे अप्पन विचारकेँ अपना मनेमे रोकि लेलाह।

अप्पन शिष्टाचार देखि गोपालो बाबूक मन कहलकैन जे विद्यार्थीक बीच कोनो शिक्षककेँ अनुशासित ढंगसँ किछु पूछब उचित। मुदा ऐठाम तँ ने तेकर खगता अछि आ ने अनिवार्यता। तँए, अनेरे किछु बाजब न हएत। बीतल दिनक कर्म (काज) सुकर्म भेल आकि कुकर्म, तेकर समीक्षा करैत सुकर्मक भूतकेँ भूतक जेड़सँ पकैड़ आनि बीर्तमान करबे ने नीक हएत। भविष्य तँ अबैबला कौल्हुका भेल, गोपालबाबू बजला-

"विमल भाय, सृष्टिक सृजन मनुक्ख छी, जे दू रंगक माने दू लिंगक छीहे। अपना सभ पुल्लिंगक रूपमे पुरुष वर्गक कतारमे भेलिऐ।"

गोपलबाबूक विचारकेँ जहिना मुनीलाल तहिना धुनीलाल सेहो मुड़ी घुमा-घुमा अङैज रहल छल मुदा विमलो बाबू नहि अङैजै छला से नहि। विमलो बाबू नीक जकाँ अङैज रहल छला जे बिच्चेमे बजला-

"पुरुषेसँ ने पुरुषार्थ बनत।"

भाषा-विज्ञानक सूत्र गोपालबाबूक मनमे जागि गेलैन। शब्दक मिलानी देखि अपने मन उत्साहित केलकैन। भाय, जेकर बिआह कनियाँ-वर देखिकऽ होइए से ने भेल देखल-सुनल, मुदा जइमे से नइ भेल आकि भेल, तेकरा गामसँ भगा देबै, ई उचित हएत।

गोपालबाबू बजला-

"विमल भाय, अहाँ विज्ञानक शिक्षक छी, दुनियाँक गतिशीलता जनिते छी।"

स्वीकार करैत विमल बाबू बजला- "हँ, से तँ अछिए।"

पाहिपर चढ़ल माछकेँ मछवार जहिना अप्पन बुझि सिनेहसँ छानि लइए, तहिना गोपालबाबू अप्पन बुझि विमलबाबूकेँ

कहलखिन-

“विमलबाबू, कियो अप्पन दृढ़ संकल्पक संग दृढ़ भऽ दृढ़ जीवनक निर्माण करैक पाछू लागिये कऽ ने अप्पन जीवन निरमित कऽ सकै छी।”

जहिना चुल्हिपर चढ़ल वर्तन तँ करिछौन भइये जाइए, मुदा ओकरो जखन मंजनसँ माँजल जाइए तँ ओहो चमकबे करैए, तहिना विमलबाबूकेँ मनक संग हृदयोमे चमक उठलैन, जइसँ चमैक तँ उठला मुदा मुहसँ कोनो बकार नहि फुटि रहल छेलैन।

चारू गोरे माने गोपालबाबू, विमलबाबू, मुनीलाल आ धुनीलाल, एक-दोसराक मुँह दिस देखैत रहैथ, कियो किछु बाजैथ नहि। मुदा जहिना बाढ़िक धाराक प्रवाहकेँ रोकब कठिन भऽ जाइए तहिना गोपालबाबूकेँ भावनाक लहरि जागि गेलैन। बजला-

“विमल भाय, आत्मा परमात्मा बनि सकैए, एहेन सूत्रक जे पहिल सूत्रधार छैथ ओ बहुत पैघ सत्यक अनुसंधान केलैन। तँए, हुनक ऐ गुणकेँ पौरुषपनक गुण मानले जाएत किने।”

सहमत होइत विमलबाबू बजला-

“हँ, से तँ मानले जाएत।”

विमलबाबूक विचारक भूखक प्रवाह देखि गोपालबाबू बजला-

“आ तहिना जे मिथ्यादृष्टि अछि माने गलत दृष्टि, ओकरो तँ सम्यक दृष्टि बनौले जा सकैए किने?”

स्वीकारैत विमलबाबू बजला-

“हँ, से तँ बनौले जा सकैए।”

गोपालबाबू आगू बढ़ैत बजला-

“जेकरा अप्पन कोनो संकल्प नहि अछि, निरालम, नि:सहाय

अछि, ओहो तँ संकल्पित बनि अप्पन जीवन निर्माण कइये सकैए किने।”

विमलबाबू, गोपालबाबूक आँखिपर सँ आँखि उतारि मुनीलालपर देलैन। मुनीलालक चेहरासँ बुझि पड़लैन जे ई तँ सोल्होअना मगन अछि। विमलबाबू बजला-

“से तँ निर्माण कइये सकैए।”

आनन्दोक तँ अप्पन सीमा अछि। अप्पन सीमापर ठाढ़ होइत गोपालबाबू बजला-

“विमल भाय, प्रमादी केना अप्रमादी बनि सकैए आ सुरागी केना विरागी बनि सकैए, ई दोसर दिन ले रहए दियौ। की धुनीलाल?”

❑

शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

मन टँगि गेल

काल्हि, जखनसँ विमलबाबू गोपालबाबूक ऐठामसँ एला, तखनसँ हुनकर मन जेना धरती-अकासक बीचक सिमान–क्षितिज–पर टँगि गेलैन। आन दिन जकाँ ने रातिक खेनाइमे उलाएल राहड़िक दालिमे आमिलक ओ स्वाद भेटलैन, जेना आन दिन भेटै छेलैन, आ ने घी लगाएल रोटीमे आ ने बदाम देल सजमनि-तरकारी आ अंगूरक चटनीमे भेटलैन। उखड़ल मनमे सभकिछु उखैड़ते अछि, भरिसक विमलो बाबूकेँ सहए भेलैन।

तेतबे नहि, खेनाइ खेलाक बाद जखन विमलबाबू ओछाइनपर एला तँ आन दिन जेना ओछाइनपर पड़िते किछुए-कालमे नीन टप-दे आबि जाइ छेलैन, तेना आइ नइ भेलैन। तँए कहब जे सोल्होअना नीन नहियेँ एलैन सेहो बात नहियेँ अछि, एलैन, मुदा से एलैन अधरतियाक पछाइत। तइमे एकटा आरो व्यवधान बीचमे आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ ई जे जहिना छनगल बच्चा क्षणे-क्षण पानियोँ पीबैए आ पेशाबो करैए तहिना क्षणे-क्षण पेशाब लागए लगलैन। पेशाब-पैखानाकेँ तँ बुझिते छी जे आन सिपाही तँ कनी ढिलाइयो दइए मुदा नेपलिया सिपाही जकाँ पेशाब-पैखान ढिलाइ नहियेँ दइए। राति भरिमे कुल मिलाकऽ आध दर्जन बेर उठि-उठिकऽ विमलबाबू पेशाब केलैन। ओना, पत्नी सेहो एकबेर टोकलकैन जे एना खुच-खुची किए लगल अछि? मुदा तेकर जवाबमे विमलबाबू की बजितैथ ओ पारिवारिक गप भेल।

ओछाइनपर सँ उठला पछाइत आन दिन जकाँ विमलबाबूक मन भकुआएल नइ छेलैन, फुहराम छेलैन। संकल्पित लोक जकाँ विमलबाबू अप्पन नित्य-कर्मपर नजैर दौड़ौलैन। पैखाना कोठरीक ओइ बिन्दुपर जा नजैर अँटैक गेलैन जैठाम अनेरे सिगरेट पीबैत रहै छी आ मनकेँ दिल्ली-बम्बैमे टहलबैत रहै छी, आ जइ काजे ऐलौं तेकरा बिसैर जाइ छी। उत्साहित मन विमलबाबूक रहबे करैन तँए नव-नव उत्साह लत्तीक डारि-पातक सिर जकाँ, धरती पकड़ैत विचार करए लगला जे जीवनक हर काजकेँ जाधैर समयानुसार सीमाबद्ध नइ करब ताधरिक जीवन ओहिना छिड़ियाएल-बितिआएल रहत, जहिना पुरना पौती-पेटारी घरमे छिड़ियाएल-बितियाएल रहैए।

निर्धारित समयपर विमलबाबू डेरासँ निकलैक विचार मनमे रोपि लेलाह। अनभुआर जिनगी रहने क्रियाक पद्धतिमे समयक घटी-बढ़ी तँ भेबे केलैन मुदा तैपर धियान ऐ दुआरे नइ देलैन जे सुतली रातिमे किछु वैचारिक समस्या-सभ जागि गेलैन जेकर समाधान वैचारिक आ बेवहारिक रूपमे केना कएल जाए, तैठाम आबि मन लसैक कऽ टँगि गेलैन। जइसँ मन थरथरा गेलैन। थरथरेबो केना ने करितैन, अपने आँखिये ईहो देखै छैथ जे कियो दिन-राति किताब चाटि विद्वान बनै छैथ तँ कियो सपनौतियो विद्वान तँ बनिते छैथ आ तहिना आशीर्वादी विद्वान सेहो होइते छैथ। एकाएक विमलबाबूक मन डगमगाए लगलैन मुदा मनकेँ थीर करैत गोपालबाबूसँ भेँट करए विदा भेला।

अपना ऐठाम कहलो गेल अछि 'हड़बड़ी बिआह कनपटी सिनूर'। विमलबाबूकेँ सएह भेलैन। सभदिना जे काज छैन, माने हाइस्कूलक शिक्षक रहने, नअ बजेसँ स्कूल जेबाक तैयारीमे जखन जुटि जाइ छैथ तखने समयपर क्लासमे पहुँच पबै छैथ। मुदा तैपर

धियाने ने रहलैन जे आइ कोन दिन छी। गप-सप्प करैक कोनो आदि-अन्त अछि, मार्क्सो कहनहि छैथ जे ऐठामक लोक बतबनौआ बेसी अछि। गामक रस्तापर पएर दइते विमलबाबूक मनमे अपने उठि गेलैन जे फिजिक्स-कैमेस्ट्रीक सूत्र जकाँ जिनगीक सूत्र बना खाली रटि नेने छी जे छअ दिन स्कूल जाएब आ सातम दिन नइ जाएब। लगले विमलबाबूक मन उनैट गेलैन, उनटबो केना ने करितैन, आइ वृहस्पति दिन छी, जँ गोपालबाबूक ऐठाम जाएब तँ अपनो नोकसान हएत आ हुनको नोकसान हेतैन। हमरे चलैत ने हुनका नोकसान हेतैन। तइसँ नीक ने जे स्कूल बन्न भेला पछाइत वापसीमे हुनके संग लागि जाएब। राति तँ अपना हाथक छी, दिनकेँ ने कियो छीन नेने अछि। मुदा चौबीस घन्टामे बारह घन्टाक राति, माने आधा जिनगी, तँ अपना हाथमे अछिए।

गामक रस्तापर चढ़िते विमलबाबू अप्पन जीवनकेँ जेना बिसरए लगला। देखिते छी जे सभ अपनाकेँ स्वतंत्र करए चाहि रहला अछि, मुदा अपना ऐठाम तँ वेदेक-विधान अछि, जे कर्म करैले अहाँ स्वतंत्र छी, अधला करब नर्क जाएब, नीक करब स्वर्ग जाएब। तइले हम अपना ऊपर किए दोख लेब। रस्तापर सँ घुमिकऽ आबि दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस विमलबाबू मने-मन विचारए लगला जे आइ की सभ करबाक अछि? आधा-छिधा मन मानियो रहल छेलैन जे जखन अपने केने अपना होइए तखन अपना जनैत अप्पन नीके किए ने करब जे अधला वृत्ति अपना अपनेकेँ ओइ वृत्तिक चक्करमे चकभौर कटाएब।

जहिना सुतल रहलापर लोक दुनियाँकेँ बिसैर सुतलोकमे भ्रमण करैए तहिना जागल रहलापर सेहो लोकक मन भ्रमण करिते अछि। एकाएक विमल बाबूक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन, जैठाम ओ स्वयं अपनाकेँ देखलैन जे विज्ञानक विद्यार्थी होइ कि शिक्षक,

चान जकाँ करिया धब्बा लगले अछि। ओ धब्बा ई जे विज्ञान पढ़निहार धर्म विरोधी छैथ जे धारणा समाजमे व्याप्त अछि।

अप्पन संगी-साथीक समुदायक बीच अपनो एकटा सदस्य छीहे, तँए विमलबाबूक अपनो मन मानि लेलकैन। मनो किए ने मानितैन, हाइस्कूलमे जहिया आठमामे नाओं लिखौलैन तहियासँ बी.एस-सी. धरि विद्यार्थीक रूपमे विज्ञान पढ़लैन आ बी.एस-सी. केलाक बाद हाइस्कूलमे विज्ञानक शिक्षक छथिए, तखन आन मानैथ वा नहि, भलेँ भुसकौले शिक्षक किए ने लोक कहैन, मुदा स्कूलमे पढ़बै तँ छथिन वएह ने।

समाजक बीच जे एहेन धारणा बनल अछि, तेकर निराकरण के करता? समाजक जे प्रबुद्ध वर्ग छैथ तिनके कलंक छिऐन आ जे वर्ग स्कूल-कौलेजक आँखिए ने देखलक, तेकरा बुते केते हएत। विचारक दौरमे जेते विमलबाबू दौड़ए चाहै छला तेते केचुआएल साँप जकाँ अपने केचुआमे ओझराइत गेला। दू विचारक पनचैती छी तँए दुनूक विचार बुझने बिना केना किछु बाजल जा सकैए। जँ एकभाग कनी निस्सन छी तँ दोसर भाग सोल्होअना फोंक छीहे। माने आठमासँ बी.एस-सी. धरिक फिजिक्स-कैमेस्ट्री तँ विमलबाबूकेँ पढ़ल छेलैन, मुदा धर्म आ अध्यात्म सुनिते टा छैथ, केना होइ छै आ केना जाइ छै, से सभ विचार किछु बुझल नहि छैन। ओना, एहनो धारणा समाजक बीच पसरल अछिए जे मनक असली बात दोसरकेँ नइ कहबै, माने नइ पुछबै.! मुदा अखन असली की आ नकली की, तेकरा छोड़ू। एकाएक विमलबाबूक अप्पन इच्छाशक्ति जगलैन। इच्छाशक्ति जगिते मन विचार देलकैन जे जेना लोक बजै छैथ जे 'छौड़ा-मारैड़ कएल खेती, नहि उपजल तँ किदैन साती' तेना नइ करैक अछि। सोचि-विचारिकऽ किछु करबाक अछि।

एकाएक विमलबाबूक मनकेँ अपने विचार धक्का देलकैन जे दुनियाँमे कियो किए केकरो हित-अपेछित, दोस-मित्र, भाय-बन्धु इत्यादि-इत्यादि बनबै छैथ? अही दुआरे ने जे संग मिलि सभ रही। तैठाम जँ मनक विचारेकेँ मनमे नुका राखब, दोसरकेँ बुझै ने देब, तखन भगवान-मालिक छोड़ि दोसर की हएत। एकाएक विमलबाबूक अपने विवेक लचिकऽ लोचन होइत दृष्टि देलकैन जे छुट्टीक पछाइत जे गोपालबाबूसँ भेँट करबैन तँ पहिल प्रश्न यएह पुछबैन। माने विज्ञान आ धर्म की छी आ किए एक-दोसरकेँ विरोधी मानल जाइए?

नअ बजेक पछाइतसँ विमलबाबू स्कूलक तैयारीमे जुटि जाइ छैथ। आब कि ओ समय रहल जे एकटा गमछा कि चद्दैर देहपर लेलौं, वएह भेल देहक पर्दा, आ कोनो काज माने राज दरबारसँ लऽ कऽ खेत-पथार धरिक सभठामक काज, ओहीसँ करैत जिनगी चला लेब। ओना, औझुका जीवन भरियेबो कएले अछि। जूतो पॉलिस केनिहार मंहगाइये गेल अछि तँए जूता पॉलिस महग भेने विमलबाबू अपनेसँ अप्पन जूताक पॉलिस करै छैथ। तहिना कपड़ाक आइरन सेहो अपने करै छैथ, जखन आइरन अपने करै छैथ तखन धोतैन कियो आन आकि अपने धोऔ पड़तैन। खाएर जे से, मुदा घन्टा भरिक पेसतरे विमलबाबू सभ काज निपटा लइ छैथ।

कोनो नव विचार मनमे एने वा कोनो नव शब्द सीखने, मनमे जहिना सदिकाल बनल रहैए जे कहीं मनसँ हटौने बिसैर ने जाइ, तहिना विमलबाबूक मनमे सेहो होइते छेलैन। खाएर जे होइत होनु मुदा एते इमानदारी तँ रखनहि छैथ जे जहिना मासे-मास दरमाहा लइ छथिन तहिना घन्टीए-घन्टी अप्पन ड्यूटी (पढ़ौनाइ) सेहो करिते छैथ। ओना, विमलबाबू अप्पन क्लास इमानदारीसँ लइ छैथ, इमानदारी की? पढ़बैक एहेन अभ्यास भऽ गेल छैन जे जेना जीहेपर

राखल रहै छैन। भेल तँ हनुमान चालीसा जकाँ आकि सत्य नारायण भगवानक कथा जकाँ, अपनो कान सुनए कि नइ सुनए, खड़ैर दिऐ। तइमे बेइमानी करैक केतौ रेह कहाँ अछि?

एक सीमापर पहुँचला पछाइत विमलबाबूक अपने मन जागिकऽ कहलकैन जे हनुमान चालीसा आ सत्य नारायण भगवानक कथाकेँ अपने पढ़लौं थोड़े ओ तँ गाम-समाजमे सुनैत-सुनैत रटा गेल अछि, मुदा हनुमान की छला, केहेन छला, किए हुनकर चालीसा चलि रहल छैन? तैपर कहियो नजैर कहाँ गेल अछि.!

साढ़े चारि बजेक घन्टी बजिते, विमलबाबूक मन जेना सर्ड़ास भेलैन। कहब जे ड्यूटी केलाक बाद सभकेँ थकान अबै छैन, आ विमलबाबूक मन सर्ड़ास केना रहि गेलैन? अहूँक विचार काटैबला तँ नइ अछि, मुदा ईहो तँ विचारए तँ पड़बे करत ने जे थकान दुनूक होइए, माने देहोक थकान होइए आ मनोक। देहक थकान ओतए निच्चाँ उतैर जाइए जैठाम कोनो लटकल फल देखि मन टँगि जाइ छइ। विमलबाबूकेँ सएह भेलैन। धर्म आ विज्ञानक बीच की दूरी अछि आ की लगीची-नगीची, तइ बीचमे हुनकर मन तेना फँसि गेल छैन जेना टीकमे चिड़चिड़ी लगने होइए। एक दिस छोड़ाउ तँ दोसर दिस पकैड़ लेत।

गोपालबाबूक संग होइले जखन विमलबाबू डेग बढ़ौलैन कि मनमे उठलैन जे मुनीलाल आ धुनीलालकेँ सेहो संग कऽ लेब नीक रहत। नीक ई जे सत्य विचार जेतेक उजागर हएत तेतेक कल्याण हेतइ। गलत काज करैबलाक मनमे ने रहैए जे पत्नियोक विश्वास नइ करी, कखन भेद खोलि बेइज्जत कऽ देत तेकर ठेकान नहि।

एक्के स्कूल आ एक्के समय, माने एक स्कूलमे प्रवेशो करैक आ निकलबोक तँ एक्के समय होइए तँए एक-दोसरसँ भेँट होइमे

सेहो सुगमता होइते अछि। एते तँ विमलबाबूमे सुधार भइये गेलैन अछि, जे मुनीलाल आ धुनीलालकेँ जेहेन नजैरसँ काल्हि तक देखैत आबि रहल छला तइमे सुधार भेलैन अछि। सुधार ई भेलैन अछि जे स्कूलक विद्यार्थीक जगह परिवारक छोट भाइक विचार जगिये गेलैन अछि।

चारू गोरे एकठाम होइते गोपालबाबूक डेरा दिस सभकियो बढ़ए लगला। ओना, विमलबाबूक मन, भेँट होइये काल माने गोपालबाबूसँ सोझा-सोझी होइते, प्रश्न पुछैले चटपटाइत रहैन मुदा अपने आगू-पाछू विद्यार्थियो आ शिक्षको सभकेँ देखि मनकेँ थतमारि लेलैन। ओना, गाम-घरक गप-सप्प करैत चारू गोरे चलिये रहल छला, मुदा विमलबाबूक मन अपने प्रश्नपर टँगल छेलैन।

डेरापर अबिते मुनीलाल-धुनीलाल बैसैक ओरियान कए दुनू गोरे, माने गोपालोबाबू आ विमलो बाबूकेँ बैसा, जलखै चाहक ओरियान करए लगल। ओरियान कि करत, सभ किछु तँ ओरियाएले छेलै, खाली समुचित ढंगसँ उपयोग करब छइ।

जलखै-चाह-पान भेला पछाइत विमलबाबू गोपालबाबूकेँ पुछलखिन- "भाय साहैब, समाजमे लोक विज्ञान पढ़निहारकेँ धर्म विरोधी बुझै छैथ, तेकर की कारण?"

विमलबाबूक प्रश्न सुनि गोपालबाबू मने-मन उत्तर (जवाब) आंकए लगला तँ बुझि पड़लैन जे अखुनका बैसार तँ पेनी तरक जे जमौठ होइए, तहूसँ निच्चाँ चल जाएत, तखन विमलबाबूक मन हल्लुक केना हेतैन। तन-मन-धन जेते हल्लुक रहए तेते नीक होइते अछि। घन्टा भरिक बैसारकेँ अंकैत गोपालबाबू बजला-

"ज्ञान जेकरा मानै छिऐ, से भेल जानब।"

सह दैत विमलबाबू बजला- "हँ, से तँ भेबे कएल।"

गोपालबाबू आगू बजला- “आ जेकरा आचार बुझै छिऐ, अखन आचारसँ आचार्य नहि बुझब, से भेल करब, माने कर्म।”

मने-मन विमलबाबू अप्पन विचार आ गोपालबाबूक विचारकेँ कट-कुट करैत तहिया-तहिया मनमे रखैत बजला-

“जानब आ करब भेल आचार-विचार।”

मुड़ी डोलबैत गोपालबाबू बजला- “हँ, आ ज्ञान-आचार, माने आचार-विचार जखन प्रगाढ़ बनैए तखन कर्म बनि अपने-आप निकलए लगैए।”

ओना, बजैक क्रममे गोपालबाबू बाजि गेला मुदा पछाइत अपने मनमे भेलैन जे विचार दोसर दिस बहैक गेल। संयोगो नीक रहल जे तैबीच विमलबाबू सेहो दोहरा देलखिन-

“भाय साहैब, धर्म आ विज्ञानक विचार तँ पछुआ गेल।”

महसूस करैत गोपालबाबू बजला-

“समयक ठेकाने ने रहल। अखन एतबे बुझि लिअ जे जहिना विज्ञान सत्य छी तहिना धर्म सेहो सत्य छी। आगूक विचार आगू।”

❑

शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

नियति आ पुरुषार्थ

सूर्यास्तक पछातिक समय। ओना अखन अन्हार पसरल नहि अछि, मुदा रातिक पहिल पहर तँ शुरू भइये गेल अछि। रवि दिन रहने गोपालबाबू अप्पन दिनक काजसँ निवृत्त भऽ दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस चाह पीब रहल छला। सोल्होअना निश्चिन्त छला। पत्नियोकेँ पारिवारिक कोनो वस्तुक खगता रहितैन तखन ने दौड़-दौड़ अप्पन रंग-बिरंगक खगताक तगेदा हिनका लग आबिकऽ करितैन। से तँ रहैन नहि, तँए ओ आँगनक ओसारपर बैस चाहो पीब रहल छेली आ मने-मन विचारियो रहल छेली जे पहिने चाह बनबैक सभ समचा माने केतली, कप, छन्ना धो-धा कऽ आनि लेब, पछाइत चाहक वस्तु-जातकेँ माने चाहपत्ती, चीनी आदिकेँ सेरियाकऽ राखब, आ तेकर बाद दरबज्जापर सँ गिलास आनि ओकरो धोइ-धाइकऽ राखि लेब। तैबीच लगले अपने विचार बदैल गेलैन, माने सुशीलाक मनमे ई उठलैन जे एक निवितक काज एकबेर करब बेसी नीक होएत, बेरा-बेरी केलासँ जेहने दलबदलू सभक मनमे रहैए, तेहने कर्ताक विचारमे सेहो भइये जाइए। ऐठाम ई नइ बुझब जे विचारगत निर्णय आ कर्मगत निर्णयमे केतौ-केतौ अन्तर नइ आबि सकैत अछि, अबिते अछि। दरबज्जापर सँ गिलास आनि सुशीला अप्पन वस्तु-जातकेँ तेना रखली जे आगू बेरक काजमे कोनो वस्तुक तक्का-हेरी नइ करए पड़तैन।

चाह पीब पान खा गोपालबाबू जखन दुनियाँ दिस, माने आगू

दिस ताकए लगला कि धब्ब-दे पाकल आम जकाँ एकटा विचार मनमे खसलैन। विचार ई खसलैन जे बेटा जकाँ जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल अछि तहिना छोट भाए जकाँ विमलबाबू सेहो छथिए। यएह ने भेल परिवार, तँए सभकेँ पारिवारिक जीवन-दर्शन करा देब उपयोगीए नहि आवश्यक आ अनिवार्य सेहो अछिए। विचारक सीमापर ठाढ़ होइत गोपालबाबू मने-मन निर्णय कए लेलैन जे जखने तीनू गोरे भेटता तँ पहिल विचार यएह रहत।

गोपालबाबूक मन जखन मानि लेलकैन तखन अपने मनमे फेर उठलैन जे जँ कहीं विचारे बिसैर जाइ तखन की करब? अप्पन तँ ओहन अभ्यास नहि रहल अछि जे कौलेजक शिक्षक जकाँ डेरापर पढ़ि विद्यार्थीकेँ पढ़ाएब। साहित्यक शिक्षक छी, किताब देखिकऽ पढ़बै छी, आन विषय जकाँ मुँहजवानी नहियेँ पढ़बै छी। मनमे फेर लगले उठलैन जे तखन मोन केना रहत? माने, तीनू गोरेकेँ जीवन-दर्शनक विचार जे करबए चाहै छी..।

गोपालबाबू पाछू उनैट ताकए लगला तँ मोन पड़लैन अप्पन दादी। कोनो बात मोन राखैले दादी गीरह बान्हिकऽ रखि तँ लइ छेली साड़ीक खूँटमे, मुदा काजक ओझरीमे तेना ओझरा जाइ छेली जे गिरहे ने ठेकानपर रहै छेलैन, बिसैर जाइ छेली। जइसँ काजक बीचमे काजे हेराएल रहै छेलैन। कबीर दास सेहो कहने छैथ ने-

'खेत में बेढ़ी दिये, बेढ़हि खा गये खेत

तीन लोक में अचरज भया, कहे कबीर कोइ देख'।

गोपालबाबूक मन कछमछाए लगलैन। कछमछेबो केना ने करितैन, जे विचार विमलबाबू, मुनीलाल आ धुनीलालक संग करए चाहै छैथ, माने हुनका सभकेँ कहए चाहै छथिन, जँ सएह बिसैर जाथि तखन अप्पन मनकमना केना पुरतैन? मुदा तैबीच

गोपालबाबूक अपने मन कहलकैन जे जाबे तक तीनू गोरेसँ भेँट नहि भेल अछि ताबे तक क्षणे-क्षण–तीन घन्टाक क्षण होइए, जेकरा पहर कहै छिऐ–मने-मन घोंकैत रहब। तखन तँ मोन रहत। मन मानि गेलैन जे यएह नीक हएत।

गोपालबाबू बैसले-बैसल जखन जीवन-दर्शनक विचारकेँ मने-मन घौंकए लगला कि मनमे विचारक दौर उठलैन। वैचारिक दौरमे एक सीमासँ दोसर सीमा धरि दौड़ लगबए लगला। दौरक मंत्रोक तँ अप्पन धर्म अछिए जे शान्त करैत-करैत तेतेक शान्त कऽ देत जे आँखि झलफलाए लगत आ झलफलाइत-झलफलाइत अलिसा सेहो देबे करत।

संयोग बनल, तीनू गोरे माने विमलो बाबू, मुनियो लाल आ धुनीलालो, सभकियो संगे गोपालबाबू लग पहुँचला।

तीनू गोरेकेँ एकसंग देखिते गोपालबाबूक मनमे उठलैन जे चाह-ताह पीबैसँ पहिने अप्पन विचार सभक बीच राखि दिऐन। मुदा, लगले अपने मन रोकि कहलकैन जे यएह ने भेल धड़फड़ीमे धड़फड़ाकऽ किछु बाजब। कोनो विचार वातावरणक अनुकूल केलासँ वजनदार होइते अछि किने।

ओना, गोपालबाबूकेँ अपना मनक भीतर कछमछी रहबे करैन जे केतेक जल्दी अप्पन मनक विचार तीनू गोरेक मनमे रोपी। तँए, अपनहि विचारक तरंगमे गोपालबाबूक मन तरंगित होइते रहैन कि तइ बिच्चेमे चाहक खेल सम्पन्न भेल। माने सभकियो चाह पीब लेलैन। गर देखि गोपालबाबू बजला-

“विमल भाय, अपना ऐठाम जीवन-दर्शनक दू विचारधारा अदौसँ काज करैत आबि रहल अछि?”

ओना, बजैक क्रममे गोपालबाबू बाजि गेला, मुदा अपने मन

जखन उनैट कऽ विचारए लगलैन तँ बुझि पड़लैन जे विमलबाबूक लेल तँ समतुल्य मोटरी भेलैन मुदा मुनीलाल आ धुनीलाल ले तँ नमहर मोटा भइये गेल। गोपालबाबूक अपने मन विचार देलकैन जे मुख्य विचार करैसँ पहिने किए ने मुनियो लाल आ धुनियो लालक मनमे पहिने एकटा भाव-जगत निरमा दिऐ जइसँ विचार स्थापित करब बेसी नीक हएत। मने-मन गोपालबाबू विचारियेे रहल छला कि विमलबाबू बिच्चेमे पुछि देलखिन-

“जीवनक दुनू दर्शनक दृष्टि संगे-संग चलि अबि रहल अछि?”

गोपालबाबू कहलखिन-

“हँ।”

मुनीलाल आ धुनीलाल बीचमे बैसल रहितो दुनू गोरेक–माने गोपालो बाबू आ विमलो बाबू–क गप-सप्पक क्रमक आधार किछु ने बुझलक तँए आँखि-कानकेँ चकोना करैत सावधान भेल। ई बात गोपालबाबू बुझि गेला, तँए मनमे उठलैन- जखन विचारकेँ बारीकीसँ व्यक्त कएल जाएत तँ किछु-ने-किछु अंश बाल-बोध रहितो बुझबे करत।

तैबीच विमलबाबू गोपालबाबूकेँ पुछलखिन-

“भाय साहैब, एते उमेर बितौला पछातियो अपनो तँ जीवन-दर्शनक लेल ओहिना छी जेना बाल-बोध मुनीलाल आ धुनीलाल अछि।”

विमलबाबूक विचारकेँ गोपालबाबू गौर करए लगला, गौर केलाक बाद विचार जगलैन जे गर लगाकऽ कहलासँ तीनू गोरे किछु-ने-किछु बुझबे करता। जखने किछु विचार मनमे गड़तैन तखने ने अपने उनैट-उनैट प्रश्न करता, जेकरा परिमार्जित करैत अपने सच्चाइक धरतीपर आनि ठाढ़ कऽ देब। अपने मनक विचार

गोपालबाबूक मनकेँ शान्त केलकैन। मन शान्त भेला पछाइत विचार जगलैन जे व्याख्यात्मक रूपमे नहि, गणितीय रूपमे विचारकेँ व्यक्त केलासँ बेसी नीक हएत।

गोपालबाबू बजला- "विमलबाबू, अहाँ विज्ञानक शिक्षक छी तँए गणितीय शैलीकेँ आसानीसँ बुझब। रहल मुनीलाल आ धुनीलाल, जँ कनियो-मनियो बुझत सेहो बड़बढ़ियाँ। अपना दुनू गोरे तँ एक-सँ-दू भइये जाएब। जखन दू गोरे भऽ जाएब तखन मुनीलाल आ धुनीलालक कोन बात जे आरो दू गोरेकेँ बुझा-सुझा बेसिया सकै छी।"

जाधैर केकरो विश्वास केकरोपर नीक जकाँ नहि जमल रहैए, ताधरिक विचार, आ विश्वास जमला पछातिक विचारमे गुणानुकूल परिवर्तन सेहो होइते अछि। जीवनो तँ परिवर्तनशील अछिए। भलेँ ओ केतौ बाध्यतासँ परिवर्तित हुअए आ केतौ स्वेच्छासँ। ..विमलबाबू बजला-

"भाय साहैब, अपनेकेँ जेना सुविधा बुझि पड़ए तहिना कहियौ। अपने जनिते छी जे अंकगणितक संग रेखागणित सेहो पढ़िते-पढ़ैबते छी।"

विमलबाबूक सिनेहक शीलताकेँ गोपालबाबू नीक जकाँ बुझि कऽ बजला-

"पहिने नियति आ पुरुषार्थ बुझि लिअ।"

नव शब्द सुनि विमलबाबू अप्पन दुनू कान ठाढ़ केलैन।

विमलबाबूक कान ठाढ़ देखि गोपालबाबू बजला-

"बेकती आ समाज दुनू दू होइए। मुदा बेकतीए समाज बनबैए। तँए दुनू दू रहितो एक्के छी। तहिना पुरुषार्थवाद आ नियतिवाद दुनू धारा समाजक बीच अदौकालसँ धड़धड़ाइत बहैत

आबि रहल अछि।”

गोपालबाबूक विचार सुनि विमलबाबू आँखिपर सँ चश्मा उतारि, जेबीसँ रूमाल निकालि आँखियो पोछलैन आ चश्मो पोछि पुन: आँखिपर लऽ अप्पन आँखि गोपालबाबूक आँखिपर ओहिना देलैन जहिना कियो बेकती बेकतीगत सिमानपर ठाढ़ भऽ अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वकेँ स्वयं देखैए। विमलबाबू बजला-

“पुरुषार्थवाद आ नियतिवाद बुझि गेलौं। की मुनीलाल तूँ सभ बुझलह किने?”

मुनीलाल बाजल- “सर, पहिने अहाँ नीक जकाँ मानि लिअ। एकटा गुरु भेटने तँ एक जिनगीक कोन बात जे सात जिनगीक उद्धार होइए, तैठाम अपने दू गोरे भेलौं, तखन मनमे निआशा किए हएत।”

गोपालबाबू बजला- “दुनू वाद, माने पुरुषार्थो वाद आ नियतिवाद सेहो वैचारिक समर्थन टा नहि, जीवनधारामे सेहो प्रवाहित होइत आबि रहल अछि।”

गोपालबाबूक विचार सुनि विमलबाबू मने-मन विचारकेँ औंटए-पौड़ए लगला। विमलबाबूक मनक औंटब-पौड़ब देखि गोपालबाबू बजला- “विमल भाय, ऐठाम पुरुषार्थवाद आ नियतिवादकेँ विराम दियौ आ नीक जकाँ बेकती आ समाजक रूप-रेखा पर गोर करियौ।”

विमलबाबूक मन चकोना-पर-चकोना नव-नव शब्दक रूप देखि हुअ लगलैन। हेबो केना ने करितैन? जहिना गाए-महींस दुनू साँझ, माने साँझोमे आ भोरोमे दूध दइए तहिना ने विचारोक अन्हार आ इजोत दुनू पक्ष अछिए। विमलबाबू बजला- “भाय साहैब, अपने लग बजबामे मिसियो भरि लाज-शरम नइ होइए, माने अप्पन

जीवनक सच्चाइ बाजैमे अहाँ लग कोनो झिझक नहि अछि। अखन जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल जीवनसँ अनभुआर अछि तहिना हमहूँ छी, तँए अनभुआर केना भुआर बनत, से तँ अपने..?”

विमलबाबूक विचारक संग चेहराक हाव-भाव देखि गोपालबाबूक मन सहमए गेलैन। बजला- “विमल भाय, पहिने समाजक एकटा रूप प्रकट करै छी।”

‘समाजक रूप’ सुनि विमलबाबूक अपने मन कहलकैन जे समाजमे रहितो, अपनाकेँ सामाजिक कहितो, समाजकेँ नीक जकाँ नहि जानि रहलौं हेन। मुदा ‘जखने जागी तखने परात’। विमलबाबू बजला- “अपनेकेँ जे श्रद्धा हुअए।”

गोपालबाबू बजला- “संस्कार आ विचार जेतएसँ प्रभावित होइए, से पहिने कहै छी। समाजक अधिकांश भाग, माने बहुसंख्य लोक, या तँ अहं भावनासँ रोगाएल छैथ वा हीन भावनासँ।”

गोपालबाबूक विचारकेँ विमलबाबू आधा-छिधा बुझबो केलैन आ आधा-छिधा नहियोँ बुझलैन। मुदा मन कहलकैन, बीचमे टोक-टाक करबसँ नीक जे पहिने एकहरफी सुनि ली। पछाइत जे नइ बुझने रहब से दोहराकऽ पुछि लेबैन। आइ जँ समय भेटत सेहो बड़बढ़ियाँ आ जँ समय नइ भेटत तँ दोसर दिन पुछि लेबैन। यएह सोचि विमलबाबू अप्पन आँखि-कान ठाढ़ केलैन। आँखि-कान ठाढ़ करबक माने जेना प्राण शक्ति शरीरमे प्रवेश करैए, तेना नहि बुझब।

विमलबाबूक रूप देखि गोपालबाबू बुझि गेला जे आगू सुनैक जिज्ञासा भऽ रहल छैन। बजला- “विमलबाबू, वैदिके युगमे पुरुषार्थो वाद आ नियतियो वादक जन्म भेल। जहिना अनेको वैदिक ऋषि पुरुषार्थवादी भेलाह, तहिना अनेको ऋषि नियतिवादी सेहो भेबे केलाह।”

विमलबाबूक मुहसँ सहजे निकैल गेलैन- “तखन तँ दुनूक जड़ि बड़ गहींरमे अछि.!”

गोपालबाबू बजला- “हँ। आगू चलू। पूर्व मध्ययुगमे बुद्धदेव भेला, महावीर भेला, जे पुरुषार्थवादी विचारेक नहि बेवहारवादी सेहो छला। ओ सभ जीवनक मूलकेँ पकैड़ अप्पन विचार प्रतिपादित केलैन। तहिना दोसर दिस ओही समयमे आजीवक सम्प्रदायक आचार्य गोशालक नियतिवादी भेला।”

बिनु विचारने विमलबाबू बिच्चेमे बजला- “इतिहासो लोककेँ भ्रमित केने अछि.!”

विमलबाबूकेँ बहकैत देखि गोपालबाबू अप्पन विचारकेँ मोड़पर चढ़बैत बजला- “भ्रमिते टा केने अछि, इतिहास की छी आ पुराण की छी, सेहो अखन तक फरिछौठ नहि भेल अछि। तइ बीचमे मनोवैज्ञानिको सभ छैथ।”

मनोवैज्ञानिकक नाम सुनि विमलबाबू बजला- “फ्राइड सेहो मनौवैज्ञानिके भेल छैथ किने?”

गोपालबाबू बजला- “हँ भेल छैथ, जिनका सम्बन्धमे रशियन मनोवैज्ञानिक मास्लोव लिखने छैथ जे फ्राइड आ डार्विन सन नियतिवादी, समाजमे गलत धारणा पसारि समाजकेँ आगू मुहेँ नहि बढ़ए देलैन अछि।”

विमलबाबू मने-मन निर्णय केलैन जे अनेरे मनोवैज्ञानिक सभक बीच ओझरा जाइ से नीक नहि, किए तँ अप्पन जीवनक दर्शन अपने करी। विमलबाबू बजला- “अप्पन जीवनक दर्शन अपने केना हएत?”

विमलबाबूक विचारक ओज, वैज्ञानिक भाषामे ओजेकेँ ऊर्जा– माने शरीरक बिजली–सेहो कहल जाइए, देखि गोपालबाबू

बजला- “हँ, जीवन दर्शने ने जीवनो पेब सकैए, मुदा तइले पहिने अपनाकेँ झाँकिकऽ देखि लेब आवश्यक अछि। आत्मा परमात्मा सेहो बनैए। ऐ सूत्रक जे पहिल सूत्रधार भेला ओ धरतीपर बहुत पैघ सच्चाइक अनावरण केलैन। जे पुरुषार्थवादक पहिल घोषणा छी।”

विमलबाबू अधमुहेँ बजला- “की घोषणा?”

गोपालबाबू बजला- “समाजमे अखनो बहुसंख्य लोक ओहन छैथ जे अपन भाग्य रेखा देखि रहला अछि। भाग्यमे जे लिखल हएत से हेबे करत। बजैकाल ईहो बजबे करै छैथ जे हम सभ एक्कैसमी सदीक मनुक्ख छी।”

विमलबाबू बजला- “एक्कैसमी सदीक मनुक्ख केना बनब?”

विमलबाबूक विचार सुनि गोपालबाबूक मन अपने हँसए लगलैन। जिनगीकेँ अखनो विमलबाबू ठठ्ठे बुझै छैथ। बजला-

“विमलबाबू, जइ मनुक्खमे जेतेक शक्तिबोध, विवेक, संकल्प आ मनोबलक विकास हएत ओ ओतेक आगू दौड़त। आ जेकरामे से जेतेक कम हएत ओ ओतेक पछुआइत रहत।”

❑

शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

❑❑❑

❑❑

❑

‘पंगु’ उपन्यासक बाद श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गद्य लेखन

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकS मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023
1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023
1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023
1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023
1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023
1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023
1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023
1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023
1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023
1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023
1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023
1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023
1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023
1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023
1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023
1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023
1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023
1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023
1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023
1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023
1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023
1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1751, तिथि: 07 दिसम्बर 2023
1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1773, तिथि: 10 दिसम्बर 2023
1141. मुक्ति: शब्द संख्या: 1875, तिथि: 14 दिसम्बर 2023
1142. मोनि फुटल धारमे: शब्द संख्या: 1854, तिथि: 18 दिसम्बर 2023
1143. मरैक बाटमे: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....